1995

चैतन्य लहरी

हिन्दी आवृत्ति

खण्ड VII अंक 1 व 2

"जब तक आप साक्षी रूप से स्वयं को नहीं देखते तब तक आपका आत्मसाक्षात्कार अर्थहीन है। स्वयं को स्वयं से अलग करके स्वयं देखें कि आप में क्या दोष हैं।"

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

खंड VII, अंक 1 व 2

विषय सूची

	पृष्ठ
1. श्रीमाताजी के 108 पावन नाम	2
2. श्री आदिशक्ति पूजा 26.06.1994	4
3. श्री विष्णु पूजा 13.7.1994	11
4. गुरू पूजा 24.7.1994	15
5. ईस्टर पूजा प्रवचन 3.4.1994 आस्ट्रेलिया	22
6. मैलबोर्न वन विहार (पिकनिक)	24

सम्पादक : श्री योगी महाजन

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री विजय नाल गिरकर
162, मुनिरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रित : प्रिन्टेक फोटोटाईपसैटर्स,
35, राजेन्द्र नगर मार्केट,
नई दिल्ली-110 060
फोन : 5710529, 5784866

आदि शक्ति पूजा के अवसर पर लिए गए श्रीमाताजी के 108 पावन नाम

1. श्रीमाताजी आप ही साक्षात मैरी, फातिमा, कोआन यिन, अथेना और मात्रेय हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
2. लम्बथ घाटी में आप ही ने नये येरुशलम की नींव रखी, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
3. अनगिनत विश्व यात्राओं द्वारा बन्धन देकर आप ही इस पृथ्वी की रक्षा करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
4. श्रीमाताजी मानव जाति की रक्षा करने के लिए अवतरित हुई आप ही साक्षात आदि शक्ति हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
5. सृष्टि को अर्थ प्रदान करने के लिए ही आप इस पृथ्वी पर अवतरित हुई, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
6. आपके कर एवं चरण कमल ही स्वर्ग की चार नदियों के स्रोत हैं आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
7. ईसा मसीह ने जिस परम चैतन्य (Holy Spirit) का वचन दिया था वह आप ही हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
8. आप की कृपा से पृथ्वी पर सत्य युग स्थापित हो गया है, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
9. आप ही प्राणवायु (Pneuma), परम चैतन्य (HOLY GHOST), शेखीना (रति), ताओ (TAO) और असज़ (ASSAS) हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
10. कुण्डलिनी को जागृत करके आप ही मोक्ष प्रदान करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
11. वास्तव में आप ही एक मात्र ऐसा अवतरण हैं जिसमें सामूहिक आत्म-साक्षात्कार प्रदान करने की शक्ति है, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
12. सभी धर्म ग्रन्थों में वर्णित पुनर्जन्म आप ही प्रदान करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
13. आप ही सुख, परामर्श एवं मुक्तिदाता हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
14. आप ही ने 5 मई 1970 को विराट का आदि सहस्रार खोला, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
15. आप ही विज्ञान एवं आध्यात्मिकता के बीच सेतु हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
16. कलियुग में भी आप साधक खोज निकालती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
17. परमात्मा के साम्राज्य की चाबी आप प्रदान करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
18. श्रीमाताजी अन्तिम निर्णय का अवतरण आप ही हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
19. महात्मा गांधी आपको नेपाली कहा करते थे, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
20. आप ही मेहदी (अपनी पूर्ण गरिमा में ईसा मसीह) के शासन का शुभारम्भ करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
21. परमात्मा के क्रोध से आप ही विश्व की रक्षा करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
22. अपने सभी कार्यकलापों में आप राक्षसी शक्तियों से युद्ध करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
23. आप ही दैवी प्रेम की अभिव्यक्ति हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
24. साधकों को मुक्त करने के लिए आप निरन्तर कार्य करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
25. आप ही आदि कुण्डलिनी का अवतरण हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
26. नागा सन्त आपके चरण कमलों की शीतल लहरियों में आराम करने का आनन्द लेते हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
27. आप ही हमारे शाश्वत्व की देवी हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
28. आप ही समय की स्वर्णिम नदी हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
29. आप मन की पकड़ से बाहर हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
30. केवल सरल एवं पवित्र लोग ही आप तक पहुंच सकते हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
31. सरल तथा पवित्र लोगों को ही आप प्रेम करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
32. आपके बच्चों के माध्यम से आपको जाना जा सकता है, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
33. सन्त जन ही आपका परिवार है, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
34. आपने पूर्व एवं पश्चिम को जोड़ दिया है। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
35. आप एक ऐसा युग लाई हैं जिसमें सन्तों का सम्मान होता है, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
36. राक्षसी शक्तियों से आप अपने बच्चों को मुक्त करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

37. आप ही हाथों को जबान देती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
38. आप ही सद्भावमयी माँ हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
39. करूणा आपका स्वभाव है, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
40. आप साधकों को सन्त बना देती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
41. असीम के हृदय में आपका निवास है, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
42. आप ही नये येरूशलम की रचना करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
43. विश्व को ब्रह्मचैतन्य से शराबोर करने के लिए आप बादलों को चैतन्यित करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
44. आप ही कयामा मोहम्मद साहब वर्णित पुर्नजन्म को लाती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
45. आप ही परम तेज से परिपूर्ण हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
46. शक्ति एवम् नम्रता को आप ही प्रसारित करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
47. हिमालय में तपस्यारत महान ऋषियों ने आपको पहचाना है, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
48. आप पाप नाशनी हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
49. आप ही जीवनदायी जल हैं जो प्यासों की प्यास बुझाता है, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
50. आपके रहस्योद्घाटन अत्यन्त कोमल हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
51. पवित्र हृदयों को आप ज्योतिमर्य करती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
52. आपने नई मानव जाति को जन्म दिया, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
53. आप जीवन की तुच्छता को एक अत्यन्त सुन्दर ब्रह्माण्ड में परिवर्तित करने वाली कलाकार हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
54. आप जन्म से ही निश्छल एवं निर्मल हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
55. आप ही सर्वोच्च एवं पूर्ण अवतरण है। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
56. जिनमें शुद्ध इच्छा है उनके लिए आप स्वयं को प्रकट करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
57. अपने शिष्यों को आप गुरूपद प्रदान करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
58. आपने विश्व निर्मला धर्म की स्थापना की। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
59. वृक्ष की जड़ों में आप नया जीवन डालती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
60. मानव मात्र को आप उत्थान का अवसर प्रदान करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
61. मानवता को आप एक नई चेतना प्रदान करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
62. आपके चरणकमल हमारे सहस्रार को सुशोभित करते हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
63. लौह आवरण को आप समाप्त करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
64. सभी पैगम्बरों ने आपकी उद्घोषणा की। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
65. अपने जीवन काल में पूजी जाने वाली केवल आप ही अवतरण हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
66. असत्य की आप निडरता से निन्दा करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
67. मानव जाति को मुक्त करने के लिए आपने अपना सर्वस्व लगा दिया। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
68. आप धर्म के तत्व को प्रकट करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
69. पंच द्वीपों में आप निरन्तर विचरण करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
70. अपने बच्चों की इच्छाओं को आप पूर्ण करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
71. कुगुरूओं के रूप में अवतरित हुए राक्षसों की आप निन्दा करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
72. आप ही सत्य हैं और सत्य की अभिव्यक्ति करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
73. हमारे प्याले को आप अमृत से भर देती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
74. खोई हुई अबोधिता को आप पुनः स्थापित करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
75. आप ही हमारे अन्दर पावन प्लेट (शक्ति) को प्रकट करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
76. आपकी विनोदप्रियता, मानव हृदय से, अन्धकार को दूर भगा देती है। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
77. भृगु मुनि ने आपके अवतरण की भविष्यवाणी की थी। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
78. असाध्य रोगों को आप ठीक कर देती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
79. प्रायः आप सहजयोगियों के स्वपन में आती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

80. सीमित रूप में आप असीम की अभिव्यक्ति हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
81. आप प्रेम एवं आनन्द प्रसारित करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
82. पत्थरों में आप कमल की सृष्टि करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
83. अपने परम पिता से मिलन के लिए आप हमें तैयार करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
84. आप सुनती हैं और कभी थकती नहीं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
85. आपके शब्द मन्त्र हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
86. सहजयोगियों को कोशाणुओं के रूप में आप अपने शरीर में स्थान देती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
87. आप महानतम पूंजीवादी और महानतम साम्यवादी हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
88. सभी रीति-रिवाजों द्वारा पूजी जाने वाली आदि माँ आप ही हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
89. हमारी जो भी स्थिति हो, आप हम में केवल आत्मा देखती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
90. शालिवाहनों के राजकीय खानदान में आप जन्मी हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
91. सन्तों के देश में आपका जन्म हुआ। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
92. सर्वोच्च राजनैतिक समाज में आप चुपचाप घूमीं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
93. अपने बच्चों पर आप बहुत से चमत्कारों की कृपा करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
94. आप ही ग्नोसिस (ज्ञान) हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
95. सभी धारणाओं को आपका हृदय द्रवित कर देता है। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
96. आप चेतना की पंखुड़ियों को प्रकाशित एवं चमत्कृत करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
97. फूलों का रंग एवं सुगन्ध आप ही हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
98. आपके चित्र जीवन्त हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
99. उदारतापूर्वक आप अपने बच्चों को असंख्य उपहार देती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
100. शाम से सुबह तक आप सुनती हैं और शिक्षा देती हैं, आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
101. आप हमारी मां भी हैं और गुरू भी। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
102. अपने शिष्यों को आप आत्मसाक्षात्कार देने की शक्ति देती है। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
103. आप दर्पण हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
104. हज़ारों साधकों की आप नशे आत्मविनाश और निराशा से रक्षा करती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
105. साधकों के चक्रों को पवित्र करने के लिए आप नई-नई विधियां निकालती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
106. कुण्डलिनी की भूमि को आपने युद्ध करके स्वतन्त्र किया। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
107. आप अन्तिम प्रकटीकरण को लाती हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
108. ब्रह्म सागर, जिसने उत्कृष्ट मेघ का रूप धारण किया, आप हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

श्री आदि शक्ति पूजा परम पूज्य माताजी निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश) कबेला, इटली 26.6.94

आज हमनें आदि शक्ति की पूजा करने का निश्चय किया है। कुण्डलिनी और आदि शक्ति की पूजा करने में अन्तर है। अन्तर यह है कि आपकी एक ओर आदि कुण्डलिनी ही कुण्डलिनी को प्रतिबिम्बित करती हैं। और दूसरी ओर आदि शक्ति है जो कि परम चैतन्य है। पूर्ण रूप से यदि आप इसे देखें तो इसके दो पक्ष होते हैं। एक परम चैतन्य के रूप में इसकी शक्ति और दूसरे कुण्डलिनी के रूप में इसका मानव में प्रतिबिम्ब।

तीसरा कार्य जो आदि शक्ति ने करना था वह था पूरे ब्रह्माण्ड की रचना करना। आरम्भ में, जैसा कि आपने देखा, किस प्रकार इस पूरे ब्रह्माण्ड और विशेषरूप से पृथ्वी गृह की सृष्टि की गई। आदम और ईव के बारे में मैंने आपको जो बताया वह पहले

जॉन ने भी अपनी ग्नोस्तीस (उच्चज्ञान) पुस्तक में लिखा। इसी ने आपको बहुत सी ऐसी बातें बताई होंगी जो कि बाईबल में है। आदि शक्ति सर्पणी के रूप में आई, उनका आदि कुण्डलिनी भाग, और ईव को बताया कि वह कहे कि ज्ञान का फल खाना चाहिए। इसका कारण मैंने तुम्हें बताया था कि मातृशक्ति नहीं चाहती थी कि उसके बच्चे उच्च श्रेणी के ज्ञान को समझे बिना पशुओं कि तरह से रहे जाएं। और उन्हें अपनी स्वतन्त्रता में ऊँचा उठने का तथा उच्च चेतना में विकसित होने का अवसर भी न मिले। माँ कि यही चिन्ता थी।

दो तरह के विश्व की सृष्टि की गई। एक तो दैवी था और दूसरे का विकास आरम्भ हुआ था। इस को देखना बहुत बड़ा कार्य था, इस प्रकार के कार्य को करने के लिए अरबों वर्ष बीत गए हैं। परन्तु यदि आप देखें तो आधुनिक समय में हम बहुत थोड़े से प्रयत्न से चांद पर जा रहे हैं, और बिल्कुल थोड़े से समय में आप वहां पहुँच जाते हैं। यह सब मानव मस्तिष्क द्वारा हुआ है। मानव मस्तिष्क है क्या? मानव मस्तिष्क विराट के मस्तिष्क के निकट भी नहीं। इसका पूरी तरह से उपयोग नहीं हुआ। मानव ने इसका बहुत थोड़ा सा उपयोग किया जिसके द्वारा वे चांद तक उड़ सके। आदि शक्ति ने पूरी प्रकृति की सृष्टि की। अपने चहुँ ओर आप जो भी कुछ देखते हैं उसकी सृष्टि उन्होंने ही की। यह सब उन्हीं का कार्य है। आप हैरान होंगे कि मैं आज एक भारी साड़ी पहनने वाली थी और मैंने कहा कि आज बहुत गर्मी है इसलिए अच्छा होगा कि मैं कोई सादी साड़ी पहन लूं। तो मैंने साड़ी बदल ली पर जब मैं बाहर आई तो देखा कि मौसम शीतल हो गया है। तो प्रकृति सब कुछ जानती है, पर प्रकृति को यह सारी सूचना कौन देता है। यह परम चैतन्य है। परम चैतन्य इतना गतिशील तो कभी भी न था, कलयुग के आरम्भ में मेरे जन्म के समय से यह गतिशील हुआ। इस समय आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होना था, दैवी सामूहिकता में इसका निर्णय किया गया था। सारे देवी-देवताओं ने इस कार्य की जिम्मेवारी किसी समर्थवान को देने का निर्णय किया था। तो उन्होंने कहा कि हम सब, हमारी सारी शक्तियां आपके साथ होंगी, पर आप इस कलियुग में मानव को परिवर्तित करने का कार्य भार ले लें।

एक प्रकार से मानव को परिवर्तित करना पशुओं को परिवर्तित करने से भी कठिन कार्य है। क्योंकि मानव की अपनी स्वतन्त्रता है और यह स्वतन्त्रता उन्हें अन्तिम स्वतन्त्रता (मोक्ष) पाने के लिए दी गई है। अपनी स्वतन्त्रता में जिस प्रकार वे आचरण करते हैं वह आश्चर्यचकित कर देने वाला है, किस प्रकार आपे से बाहर हो कर वे विनाश कार्य करते हैं। निसंदेह भविष्यवाणी की गई थी कि कलियुग में भारतवर्ष में क्या होगा। परन्तु, मैं सोचती हूँ, अमेरिका तथा पश्चिमी देशों के बारे, जहां अपना सर्वनाश करना और उसके लिए नए साधन खोज निकालने की लोगों को स्वतन्त्रता है, कोई भविष्यवाणी न की जा सकी। आदि शक्ति या सर्वशक्तिमान परमात्मा भी इस प्रकृति को रोक नहीं सकते क्योंकि अपना सर्वनाश करने की, स्वयं को बिगाड़ने की, और नर्क में जाने की पूर्ण स्वतन्त्रता आपको दी गई है। कोई भी दैवी शक्ति इस पर काबू नहीं पा सकती। दैवी शक्ति आपकी स्वतन्त्रता का सम्मान भी करती है। तो देवताओं ने सामूहिक रूप से सोचा कि मानव आदिशक्ति की सृष्टि को पूरी तरह से नष्ट करने वाला है। क्या हम आदिशक्ति की सृष्टि को पूरी तरह से नष्ट होने दें और फिर कुछ बेहतर रचना करें। यह वाद विवाद चल रहा था और उनमें से अधिकार मानव से तंग थे, विशेष तौर पर पश्चिमी स्वतन्त्रता से। कहने लगे कि इन लोगों को नर्क चाहिए तो हम इन्हें स्वर्ग क्यों दें? यह अनुचित है।

पहला कार्य जो आदिशक्ति ने किया वह था मानव में जिज्ञासा पैदा करना। जिज्ञासा उत्पन्न होने पर इस विध्वंसकारी संस्कृति के लोग खोज करने लगे। जब यह खोज शुरू हुई, तो सदा की तरह से, बहुत से लोग उनके प्रश्नों का उत्तर देने के लिए बाजार में आ गए। साधकों को बहुत से धार्मिक सम्प्रदायों और झूठे लोगों के पास जाना पड़ा क्योंकि उनके पास सत्य को जानने का और कोई रास्ता ही न था। यदि उन्होंने कबीर, नानक की पुस्तकें या गूढ़ ज्ञान के शास्त्रों को पढ़ा होता तो वे जाने कि सत्य क्या है और इसे किस प्रकार खोजा जाए। मैं देखती हूँ कि सत्यसाधकों तथा दूसरे प्रकार के लोगों में बहुत बड़ा संघर्ष रहा। दूसरी प्रकार के लोग कुछ जानना नहीं चाहते अतः कभी भी साधक नहीं बन सकते। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि उनमें से कुछ तो कभी भी साधक नहीं बन सकेंगे। रोग ग्रस्त होने पर भी वे कहेंगे कि हम शहीद हैं और महान कार्य कर रहे हैं। उनके मस्तिष्क में ऐसी मूर्खता भर गई है कि वे सोचते हैं कि इन्हीं गलत कार्यों को करने से ही उनकी रक्षा होगी। विकृत मस्तिष्क के कारण ही यह मूर्खता आती है। लोग जब स्वतन्त्र हो जाते हैं तो यह विकृत मस्तिष्क कार्य करता है। अपने चारों ओर देख कर वो क्यों नहीं समझ जाता कि क्या घटित हो रहा है। ये आशा करना कि पूरा विश्व स्वर्ग में चला जाए, असंभव है। लोगों ने सब प्रकार के ऐब किए हैं। मैंने लोगों को नशे और शराब का सेवन करते हुए देखा। एक व्यक्ति ऐसा है जिसे पी.एच.डी. की उपाधि मिली और उसका विषय था 'मदिरा पान द्वारा' आध्यात्मिकता को कैसे प्राप्त करें। तो सत्ता में, विश्व विद्यालयों में, मैं नहीं समझ पाती, इस प्रकार के मूर्खलोग कहां से आ गए, कौन सी सृष्टि से? यह समझ पाना असम्भव कार्य है। वो कैसे सोचते हैं कि इस प्रकार का विनाश उन्हें मोक्ष तक ले जाएगा। प्रतिदिन वे देखते हैं और जानते हैं कि क्या घटित हो रहा है, परन्तु फिर भी वो देख नहीं पाते। पर जो साधक हैं वे इतने उत्साह से साधना कर रहे हैं कि उन्हें आत्मसाक्षात्कार देना ही

होगा। यह मेरा कार्य है। इसी कार्य के लिए मैं पृथ्वी पर आई हूँ। मैं भरसक प्रयत्न कर रही हूँ। मेरी तरह से इतने वर्षों तक कोई भी अवतरण पृथ्वी पर जीवित नहीं रहा। और मेरी करूणा मुझे कहती है कि अभी बहुत से लोगों को सहजयोगी बनाना है, हमें एक बहुत बड़े स्तर पर मोक्ष को पाना है। इस करूणा और प्रेम के साथ व्यक्ति कोई भी उपाय कर सकता है। मैं नहीं सोचती कि वो लोग भी इसे पा लेंगे जो लोग साधक नहीं है।

ऐसा क्यों है कि कुछ लोग साधक हैं और कुछ नहीं है। यदि आदि शक्ति ने सबकी सृष्टि की है तो सभी को साधक होना चाहिए था। कारण ये है कि स्वतन्त्रता में वे अपना रास्ता खो बैठे हैं। वे किसी अन्य चीज को खोज रहे हैं और समझते हैं कि वे ठीक है। स्वयं को ठीक समझने का उन्हें अधिकार है। एक मूर्ख या पागल व्यक्ति भी स्वयं को ठीक समझता है। आप यदि उससे कहें कि वह पागल है तो वह आपको ही पागल कहेगा। जिज्ञासा यद्यपि उनमें डाल दी गई है फिर भी अभी तक वे इसके योग्य नहीं है। उनमें से बहुत से लोग ठीक प्रकार से इसे प्राप्त कर रहे हैं क्योंकि इसके लिए समर्पण आवश्यक है। अपनी स्वतन्त्रता या विवेक का समर्पण नहीं, परन्तु मानव के अन्दर विकसित हुए अहं का सम्पर्ण।

मैंने भूत बाधित लोग भी देखे हैं। वे भी अपने अहं को बनाये रखना चाहते हैं और अहं के माध्यम से बाधा का उपयोग करना चाहते हैं। नकारात्मक शक्तियों की बाधाएं हैं। ये लोग इन्हें बनाए रखना चाहते हैं ताकि अपने स्वार्थ के लिए वे इनका उपयोग कर सकें। न तो वे इन बाधाओं से घृणा करते हैं और न इनसे छुटकारा पाते हैं, वे इन्हें रखना चाहते हैं क्योंकि इनका उपयोग हो सकता है। अतः वहाँ पर साधक का दर्जा बहुत कम है। परन्तु बहुत से ऐसे भी हैं जो साधना के निकट भी नहीं पहुँचे, उन्हें हम दुष्प्रवृत्ति मानव कह सकते हैं। वे नहीं चाहते कि यह विश्व परिवर्तित हो। यही दुष्ट लोग हमारे समाचार पत्रों पर छाये हुए हैं। वे नहीं चाहते कि विश्व का परिवर्तन हो या यहाँ अच्छाई प्रकट हो। वे उस सत्य को नहीं देखना चाहते जो मानव को सहायक हो या मानव के हित में हो।

एक ओर हम ऐसी सामूहिक नकारात्मकता देखते हैं और दूसरी ओर वास्तविक साधक। कुछ अधपके हैं और झूठ-मूठ के। साधना के नाम पर यदि उन्होंने उनके लिए कोई बलिदान किया है तो वे महान हैं। दावे करने वाले लोगों से वे जुड़ जाते हैं। मैंने अपने वस्त्र भी नहीं बदले। एक घरेलू स्त्री की तरह से मैं रहती हूँ। तो वे मुझसे प्रभावित नहीं है। अपने बारे में कुछ महान दर्शाने के लिए मुझ में दो सींग नहीं निकले, इस लिए वे मुझसे प्रभावित नहीं है। परन्तु दूसरी ओर यदि आप देखें तो यह महापाप है। जहाँ आदि शक्ति मनुष्यों की तरह से ही सभी कार्य करती है। आप यह भी नहीं जान सकते कि वे परमात्मा हैं। जब तक मैंने यह कार्य शुरू नहीं किया तब तक मेरे परिवार के लोग भी न जान पाये। मेरे माता-पिता के अतिरिक्त कोई न जान पाया कि मुझमें कोई शक्तियां भी हैं। परमात्मा के प्रति यह असंवेदनशीलता आदि-शक्ति की महामाया शक्ति ही बना सकती है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अन्यथा आप इसे समझ नहीं सकते। इसके बावजूद भी मैंने बहुत बार समझने में गलती की क्योंकि कुछ देर के लिए यह लोग छद्मावरण धारण कर लेते हैं। परन्तु मुझे पता चल जाता है। केवल गहनता से सत्य की खोज करने वालों को ही सत्य की प्राप्ति होती है। इसके बारे में कोई संदेह नहीं है क्योंकि पूरी सृष्टि, पूरा ब्राह्माण्ड, सारे देवी देवता और सारे देव दूत उनके लिए हैं। वे सब उन्हीं की तरफ देख रहे हैं। इतने अधिक सहजयोगियों का होना बहुत महत्वपूर्ण बात है, अपने जीवन काल में कोई भी इतने अधिक सहजयोगी न बना सका है क्योंकि इसके लिए माध्यम होना आवश्यक है। मुझे भी माध्यमों की आवश्यकता है और मेरे माध्यम अत्यंत शुद्ध, सुन्दर अबोध एवं हितकारी होने चाहिए। यदि वे इस बात के प्रति समर्पित हो जाएं कि हम यहां परमात्मा के यंत्र हैं और हमें अन्य लोगों का हित करना है तो मैं आपको बताती हूँ कि सत्तर प्रतिशत कार्य हो जाएगा। चाहे उन्हें उसी प्रकार आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ हो जैसे अण्डे के खोल से एक पक्षी का बाहर आना। कुछ पक्षियों पर खोल का हिस्सा चिपका रह जाता है और कुछ अभी पक्षी की अवस्था तक विकसित भी नहीं होते। हमें स्वयं को तोलना और समझना है।

एक अन्य चीज आपको जाननी है वह यह कि मैं एक अत्यंत नम्र व्यक्ति हूँ। लोग समझते हैं कि मैं अत्यन्त क्षमाशील हूँ। मैं सभी को जानती हूँ परन्तु मैं कहती हूँ "ठीक है जहां तक चल सकते हो चलते जाओ।" मानव केवल अनुभव के आधार पर सीख सकता है, समझने से नहीं सीखता। आत्मसाक्षात्कार के अनुभव द्वारा आप समझ सकें, फिर भी मैं कहूँगी कि पूरे विश्व को हम आत्मसाक्षात्कार नहीं दे सकते। लोग पत्थरों जैसे हैं। पूर्णतः भयंकर, झूठे लोगों का पर्दा फाश हो रहा है और इस अनावरण को सभी लोग देख रहे हैं। ये अनावरण बहुत से लोगों को इन कुगुरूओं से बचा लेगा। पर मैं नहीं जानती कि वे सहजयोग में आयेंगे और आत्मसाक्षात्कार ले पायेंगे कि नहीं। यह मैं इसलिए कह रही हूँ क्योंकि मुझे भी मनुष्यों का अनुभव है और इन वर्षों में कार्य करते हुए मैंने भी देखा है। मैंने देखा है कि असंख्य लोग हैं। उनमें से साधक अपनी साधना के लिए अत्यन्त गर्वित हैं। कुछ अपनी साधना को नहीं छोड़ना चाहते, उनके लिए यह एक प्रकार का शौक है।.....

उनके पास साधक होने का प्रमाण पत्र है। वे अजीबो गरीब कपड़े पहनते हैं, उनके घर तथा बाल अजीबो-गरीब हैं। वे

अक्रामक और गाली गुफ्तार देने वाले हो सकते हैं। यह साधकों की एक अन्य श्रेणी है। उनके लिए यह एक जीवन शैली है। अपनी खोज के लिए वे दस-बीस स्थानों पर जाएंगे। यहां तक कि वे मेरे से भी बहस करते हैं कि साधना के और तरीके भी तो होंगे। मैं कहती हूं "मैं और कोई तरीका नहीं जानती, पर आप जा सकते हैं।"

आज आदिशक्ति का मुख्य कार्य आत्मसाक्षात्कार देना है। बाकी सारा प्रबन्ध तो कम्प्यूटर की तरह से हो ही रहा है। मुझे कोई चिंता नहीं करनी पड़ती। यह एक सहजक्रिया है। जो भी कुछ घटित हो रहा है वह एक सहजक्रिया है। जैसे लोग कह सकते हैं, "श्री माता जी मैंने आपको प्रार्थना की और आपने किस प्रकार मेरी इतनी सहायता की।" ये सब सहज क्रिया है। उस समय हो सकता है मुझमें कोई विचार आता हो परन्तु है ये सहजक्रिया ही। मैं वास्तव में कुछ नहीं करती। वास्तव में मैं "निष्क्रिय हूं।" मैं कुछ नहीं कर रही। कोई सर्वाधिक आलसी व्यक्ति अगर है तो वह मैं हूं क्योंकि जब एक पूरी संस्था मेरे लिए कार्य कर रही है तो मैं क्यों चिंता करूं। परन्तु मैं साक्षीभाव हूं और साक्षीरूप से जब मैं देखती हूं तो यह प्रतिबिम्ब पर कार्य करता है। यह परम चैतन्य को कार्यान्वित करता है। क्योंकि यदि परमचैतन्य आदि शक्ति की शक्ति है तो जो भी कुछ मैं साक्षी भाव से देखती हूं उसकी सूचना उस शक्ति तक पहुँच जाती है। जैसे विद्युत शक्ति है। यदि यहां पर कुछ खराबी आ जाए तो इसकी सूचना विद्युत शक्ति को नहीं मिलती, यह यहीं समाप्त हो जाती है। परन्तु मेरे साथ यह दूसरी तरह से है, यदि मैं साक्षी रूप से किसी गलत चीज को देख रही हूं तो मुझे कुछ नहीं करना पड़ता। मैं बस साक्षी होती हूं और देखती भर हूं। इस भयंकर शक्ति, जिसे आप नहीं जानते, के माध्यम से पूरी चीज दिखाई पड़ती है। आप कुण्डलिनी और चक्रों के बारे में सब कुछ जानते हैं। यह परमचैतन्य की शक्ति कण-कण में है और इस प्रकार से कार्य करती है कि यह निर्देश करती है, आपको आगे और हित के पथ पर ले जाती है। कभी-कभी लोग कहते हैं कि "श्रीमाताजी" मैं ये दुकान खरीदना चाहता था, पर मैं इसे ले न सका।" आपका इस दुकान को न खरीद पाना ही आपके हित में है, दस दिनों के बाद वे आ कर कहते हैं "परमात्मा का धन्यवाद कि मुझे वह दुकान नहीं मिली।" शनैःशनैः अनुभव करके आप समझने लगते हैं कि आपको चिंता करने की कोई जरूरत नहीं।कभी यदि आप रास्ता भटक जायें तो प्रायः आप परेशान हो जाते हैं पर सहजयोगी परेशान नहीं होते। वे सोचते हैं कि इसमें भी कोई हित होगा तभी तो परमात्मा हमें यहां लाये हैं। यह कार्यशैली थोड़ी सी परिवर्तित हो जाती है। अत्यंत गतिशील व्यक्ति सोचता है कि अब मुझे समर्पण कर देना चाहिए, "इस्लाम।" परमचैतन्य के सामने समस्या डाल दें और यह कार्य करना है।

बन्धन मात्र देने से विश्व में इतनी बड़ी-बड़ी घटनाएं हुई हैं कि अविश्वसनीय हैं। यह भी परमचैतन्य की उपस्थिति की अभिव्यक्ति है। यह कृत है। यह कार्य कर रहा है। कृत अर्थात क्रिया। तब आप महसूस करने लगते हैं कि कुण्डलिनी के माध्यम से आप यह शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। कुण्डलिनी का उठना भी, उसी प्रकार आदिशक्ति का प्रतिबिम्बित होना है। जिस प्रकार हमारा चांद को एक हिस्से को देख पाना और दूसरे हिस्से को न देख पाना। इसी प्रकार जब यह शक्ति आपके अन्दर उठती है और परमचैतन्य को छू लेती है तो इससे आप शक्तिशाली व्यक्ति बन जाते हैं। इसी प्रकार आप सहजयोगी हैं। पर आप परमात्मा नहीं हैं। अवतरण कह सकता है कि "मैं परमात्मा हूं," आप अवतरण नहीं हैं। पर किसी भी अवतरण में कभी नहीं कहा कि वे आदिशक्ति हैं। वे कह ही नहीं सकते।

आदिशक्ति की यह शक्ति, जिसे हम परमचैतन्य कहते हैं, आपको प्रेम करती है, प्रकृति पर इसका पूर्ण प्रभुत्व है। यह आपको समझती है। यह सोचती है। आपके विषय में यह सब कुछ जानती है। हर कोण पर और जीवन के हर क्षेत्र में यह कार्य करती है। यह पूर्णतया आपके साथ है। मान लो आप नदी की तेज़ धारा में गिर जाते हैं, आप तैर नहीं सकते, अपने हाथ भी नहीं चला सकते, तब आप धारा के साथ-साथ बहने लगते हैं। इस स्थिति में आप जान पाते हैं कि धारा के साथ बहना इसमें से बाहर आने के प्रयत्नों से कहीं अच्छा है। अपने आस-पास की प्रकृति का आनन्द लें। आप इसमें डूबते नहीं। इसके विपरीत आप पाते हैं कि उन्नत होकर आप इसके साथ बह रहे हैं। तब आप समझते हैं कि जिस कार्य को परमचैतन्य कर रहे हैं उसका मुझे क्या करना है। इसका सारा श्रेय आपकी कुण्डलिनी को दिया जाना चाहिए जिसने इसे कार्यान्वित किया, आपको किनारे (तट) और परमात्मा के सुन्दर स्वर्गीय साम्राज्य तक पहुँचाया।

इस प्रकार आप समझते हैं कि दो घटनाएं घटित हुई हैं। पहली यह कि आपकी कुण्डलिनी, जो कि आपके अन्दर है, जो आपकी माँ है, आपकी अपनी मां है, जो सदा सर्वदा आपके साथ रही है, जिसने आपको यह जन्म दिया है और फिर आपको उस शक्ति तक ले गयी है जिसे आप स्वयं उपयोग कर सकते हैं। अब आप शक्तिशाली है। आप आश्चर्यचकित होंगे कि किस प्रकार यह शक्ति सहायता कर रही है। मान लो आप कालीनों का व्यापार कर रहे हैं तो आप जानते हैं कि इसका कौन सा पैट्रन है, और यह कहां से आयी है आदि। उस कार्य में यदि आप हैं तो आप उसके विषय में सब कुछ जानते हैं। यह शक्ति यदि सर्वत्र है तो व्यक्ति को इसके बारे में पूरा ज्ञान होना चाहिए। सम्बन्ध ही ऐसे हैं कि यदि आप कुछ जानना चाहें तो उसे जान सकते हैं। इसी कारण 'बुद्ध' कहा जाता है और भी, वह सारे लोकों को देखता है। वह किस प्रकार देखता है? क्योंकि उसका अहंकार,

आप कह सकते हैं, परम अहंकार, 'महत् अहंकार', सभी कुछ जानता है, जबकि आपका अहंकार कुछ भी नहीं जानता। क्योंकि यह कुछ नहीं जानता इसलिए यह आपको लपेट लेता है। अहं को यदि पता होता कि सत्य क्या है तो आप स्वतन्त्र व्यक्ति होते, परन्तु आप स्वयं को 'ताओ' की तरह नदी में नहीं देना चाहते। आप आनन्द नहीं लेना चाहते। आप अपनी विशिष्टता चाहते हैं। व्यक्तित्व मैं ऐसा हूँ, मैं वैसा हूँ से बहुत भिन्न हैं।

यह अन्तर करण आरम्भ होना चाहिए। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात आत्मसाक्षात्कार के प्रकाश में आपको इसे देखना शुरू कर देना चाहिए। पहली एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपने अहं को बताएं।कि 'शान्त हो जाओ।' चुप रहो तुम कुछ नहीं जानते। आजकल के समय में आप किसी से कुछ पूछें तो उत्तर मिलता है, मैं कुछ नहीं जानता।' यह बहुत बड़ा फैशन है। आप किसी से पूछें आपका नाम क्या है? वे कहते हैं मैं नहीं जानता। वह अपना नाम तक नहीं जानता और ऐसे मूर्ख लोग सोचते हैं कि वे दिखा रहे हैं कि वे बहुत अबोध हैं। मैं हैरान होती हूँ, पता नहीं किस पशु ने हममें यह मूर्खता उत्पन्न कर दी है। पर मैं एक चीज जानती हूँ कि यह अहम् है। अहम् व्यक्ति को पूर्णतया मूर्ख बना देता है। मराठी में कहते है कि जब कोई व्यक्ति अहम् का प्रदर्शन करना शुरू कर दे उस दिन से वह झाड़ पर चढ़ने लगता है।

यह सारा अहम् आपके कथित विचारों और उपलब्धियों के माध्यम से आता है। पर यह कौन सी उपलब्धियां हैं। आप कुछ नहीं जानते। यही बात मैंने आज आपको बतानी है कि यदि कोई चीज कार्य कर रही है तो वह है आपके अहम् का समर्पण। आप यदि अहम् समर्पित करना जानते हैं तो आप इस कार्य को कर लेंगे।

एक अन्य चीज जो मुझे आश्चर्यचकित करती है, विशेषतया पश्चिम में, कि मैं सोचती हूँ कि स्त्रियां शक्ति हैं। परन्तु पश्चिम में मैं देखती हूँ कि महिलाएं आदि शक्ति का उपयोग नहीं कर रही हैं। वे अभी तक अपनी भावनाओं और विचारों आदि में फंसी हुई हैं। पुरुषों में तो अहम् है ही, परन्तु महिलाएं भी अहमग्रस्त हैं। यह बहुत कठिन है। उदाहरणतया आप किसी पश्चिमी लड़की का विवाह करें तो वह बहुत प्रसन्न होगी, उछलेगी, सभी उपहार लेगी, बधाइयां लेगी, सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहनेगी आदि-आदि। दस दिनों के पश्चात् वह आकर कहेगी, "श्रीमाता जी, मेरी समझ में कुछ नहीं आता तो आप अपने सारे गहने आदि लौटा दें।" तब वह कहेंगी। "नहीं-नहीं मुझे सोचने दीजिए।" यह सहजयोगिनी का स्तर नहीं है। सहजयोगिनी एक शक्ति है और उसे चुनौती स्वीकार करनी है। "मैं आपको दिखाऊंगी। मैं और अधिक अच्छी तरह से करूंगी।" इसके विपरीत मैं पाती हूँ कि वे अत्यन्त रोबीली हैं। मैं हैरान होती हूँ। शक्ति को क्यों रौब जमाना चाहिए? यदि वह शक्ति है तो रोब नहीं जमाएगी। जो नहीं है वे रोब जमाएगी। जैसे भारत में यदि आप किसी कलैक्टर के घर जाएं तो वह अति नम्र होगा, परन्तु एक सिपाही बहुत ही रौब झाड़ेगा। इसी प्रकार मैं देखती हूँ कि यह रोब जमाओ शैली बहुत आम है और यह एक प्रकार से नन (मठवासिनी) जैसा स्वभाव है। वे नन की तरह से वेशभूषा धारणा करेंगी, नन की तरह व्यवहार करेंगी। वे मुस्कराएंगी नहीं। आप सहजयोगिनीयां हैं या मठवासिनियां अच्छा हो आप मठवासिनियां बन जाएं। यह सब मैं आपको क्यों बता रही हूँ क्योंकि हम आदिशक्ति के विषय में बात कर रहे हैं। इसलिए मैं शक्ति के विषय में बता रही हूँ। किस प्रकार शक्ति को अभिव्यक्त होना है।

मैं हैरान थी कि स्त्रियां सहजयोग का प्रचार नहीं कर रही हैं। किसी ने मुझे बताया कि अगुआगण नहीं चाहते कि महिलाएं सहजयोग का प्रचार करें। यह गलत है। यदि अगुआगण ऐसा कहते हैं तो यह अनुचित है। सर्वप्रथम तो महिलाओं को सहजयोगिनी बनना है क्योंकि मैंने देखा है कि किसी महिला को नेतृत्व मिलते ही पूर्णतया बेकार हो जाती है। सभी नहीं पर कुछ।

सहजयोगिनी का कर्त्तव्य है कि ध्यान-धारणा, आत्मानुमान और आत्म-सम्मान के माध्यम से अपना विकास करें, कि मैं सहजयोगिनी हूँ। मैं ही शक्ति हूँ। मैं उसकी अन्तः शक्ति हूँ। क्या मैं अन्तः शक्ति हूँ? सहजयोगिनियों ने यह निर्णय करना है अन्यथा वे भूत-ग्रस्त हैं और स्वयं को शाश्वत मानते हुए मन के लड्डू खाती रहती हैं। यह बहुत कठिन है। मैं वास्तव में चाहती हूँ कि कुछ अच्छी सहजयोगिनियां नेतृत्व सम्भालें। पर अगुआ बनते ही वे बेलगामे घोड़े की तरह दौड़ने लगती हैं। अतः नम्र हो जाइए। उनके घट में ही जब स्थान नहीं होगा तो उसमें जल कैसे भरेगा? हृदय को विशाल कीजिए। किसी का आपके घर आना आपको पसन्द नहीं, दूसरों के लिए आप कुछ करना नहीं चाहती। पश्चिम मे मैं कह रही हूँ कि महिलाओं को शक्ति अपने अन्दर समेटनी है। शक्ति का अभिप्राय यह नहीं कि अपने पति पर रोब जमायें या उसका बेवकूफ बनायें। इसका अर्थ है उसे शक्ति दें। आप ही पूरे परिवार की शक्तिदाता हैं। और यह हमारा परिवार है। यह पूरा ही मेरा परिवार है। मैं सभी के लिए बहुत चिन्तित हूँ। छोटी-छोटी चीजों की भी मुझे चिन्ता है। मैं कभी सन्तुष्ट नहीं होती कि अब मैंने अपना कार्य कर लिया है। हर समय मुझे किसी न किसी का ध्यान होता है। यह शक्ति निरन्तर प्रवाहित होती रहती है और कार्य करती है। क्योंकि सबके लिए मेरा प्रेम अति गहन है इसलिए यह कार्य करता है। क्योंकि मेरा प्रेम निष्कपट है, मैं कभी अपनी चिन्ता नहीं करती।

कभी नहीं। अन्य महिलाओं को अपनी सुरक्षा के लिए संलग्न देखकर मुझे हैरानी होती है। दूसरों के लिए चिन्ता की आवश्यकता है। अन्य लोगों के लिए प्रेम एवं करुणामय ध्यान अपेक्षित है, उसे विकसित करें।

मैंने देखा है कि सहजयोगी एक दूसरे के बच्चों की भी देखभाल नहीं करते। कभी किसी की सहायता नहीं करते। परस्पर प्रेम के बिना आपका मस्तिष्क सामूहिक नहीं हो सकता। आप में सामूहिक शक्ति नहीं हो सकती। अतः आवश्यक है कि आप सब सामूहिक बनने का प्रयत्न करें। एक दूसरे के बच्चों की देखभाल करें। कबेला की महिलाओं को मैं बताना आवश्यक समझती हूँ कि कबेला एक आश्रम है। अन्य आश्रमों से, यहां तक कि आस्ट्रेलिया के आश्रमों से आने वाले लोग भी हैरान हैं कि यह महिलाएं कबेला में ऐसे रह रही हैं जैसे होटल में रह रहीं हों। इसके लिए वे पैसा देती है, हम सभी पैसा देते है, फिर भी बागीचे और अन्य चीजों की देखभाल करते हैं। यहां किसी को चिन्ता नहीं है। वे हर चीज का उपयोग कर रहे हैं। हैरानी की बात है कि मेरे यहां होते हुए भी उनका ये व्यवहार है। आस्ट्रेलिया, अमेरिका या अन्य जहां भी आश्रम हैं यदि आप जाएं तो देखोगे कि सभी लोग इतवार को कार्य करते हैं। पर यहां मैं देखती हूँ कि ये सब गायब हो जाते हैं। ये आपका आश्रम है। आप लोग यहां ठहरे हुए हैं और मुझे लगता है कि आपकी शक्तियों में सहजयोग लुप्त हो रहा है। उनमें से एक तो मुस्कुराना तक नहीं जानती और कुछ अत्यन्त रौबीली हैं। मुझे ये बताना पड़ रहा है। क्योंकि वे सब बहुत महत्वपूर्ण हैं। मेरे अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति ने यह कार्य न किया होता। किसी पुरुष अवतरण ने यह कार्य न किया होता। ईसा छोटी सी आयु में क्रूसारोपित हो गए, एक अन्य ने जहर ले लिया, दूसरे की किसी ने हत्या कर दी। आदि-आदि। सभी छोटी सी आयु में चल बसे। कोई भी यह कार्य न करना चाहता था सभी तंग हो गए। हमारे यहां ज्ञानेश्वर जी हुए हैं उन्होंने 23 वर्ष की आयु में ही समाधि ले ली। तंग आ गए होगें वे भी इन लोगों से। महिलाओं को अपनी माँ (श्री माताजी) की तरह से धैर्य, स्नेह, प्रेम स्वयं में विकसित करना होगा तभी आप देखेंगे कि किस तरह आपकी शक्ति कार्य करती है। मैंने बार-बार इसके बारे में बताया है, और आदि शक्ति के स्तर पर मुझे यह कहना है कि अपने परिवार में आप शक्ति की तरह से हैं। आपको विवेकशील बनना होगा, समझदार बनना होगा। आपको अपने पति और बच्चों को समझना होगा, अपने धैर्य को समझना होगा। इसके विपरीत वे अपने बच्चों को बिगाड़ देती है। ये समझना आवश्यक है कि उनके हित में क्या अच्छा है। आज मैं कहती हूँ कि यदि बच्चे स्कूल जाते हैं तो उन्हें स्कूल से निकाला नहीं जाना चाहिए। यह उनके हित के लिए है। उन्हें स्कूल से हटा कर क्या लाभ होगा। अपने बच्चों के प्रति इतना मोह होना दर्शाता है कि आप शक्तिविहीन लोग हैं। आपको सभी बच्चों से प्रेम करना चाहिए, सभी बच्चों की देखभाल करनी चाहिए, उनमें दिलचस्पी लेनी चाहिए। पर मैं देखती हूँ कि वे केवल अपने बच्चों से ही प्यार करते हैं। हमें हर चीज आपस में बांटनी है।

सामूहिक आचरण के प्रति असंवेदनशीलता आपके बच्चों को और पूरे समाज को बिगाड़ देगी। भारतीय समाज में बच्चे अच्छे हैं और इसका श्रेय भारतीय स्त्रियों और उनकी विवेकशीला को जाता है। भारत के पुरुष मूर्ख है। उन्होंने राजनीति, अर्थशास्त्र आदि को बिगाड़ दिया है। पर समाज अभी भी कायम है। और वे लोग अभी तक ठीक रास्ते पर हैं। यह महिलाओं के विवेक के कारण ही हो पाता है। स्त्रियां यदि घंटो वस्त्रधारण करने पर लगा दें और यही सोचती रहें कि आज हमने क्या पहनना है तो सब समाप्त हो जाएगा। आज कुण्डलिनी पूजा का दिन है, कुण्डलिनी मां है और आप भी माँ हैं। कुण्डलिनी की तरह आपको भी अपने बच्चे की हर बात का ज्ञान होना चाहिए मेरे पास आकर कोई यदि बताता है कि उसका बच्चा नशे का आदि हो गया है। ये कैसे संभव हो सकता है। भारत के बच्चे नशे के आदि नहीं हो पाते क्योंकि हर समय माताएं बाज की तरह से उनके सिर पर सवार रहती है। उन्हें पता होता है कि उनके बच्चे कहां जाते है और क्या करते हैं। माँ बच्चे से प्रेम करती है फिर भी उसके बारे में सब जानती है। मेरे विवाह के बाद भी जब मैं घर गई तो मेरी माँ पूछती थी "तू कहां गई थी"? हममें कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं होती। "छः बजे तक वापिस आ जाना" और हमें उस समय तक वापिस आना होता था। यह मां का कार्य था – कि बच्चा कहां जाता है, क्या करता है। बच्चे इसीलिए आपकी बात नहीं सुनते क्योंकि आप उन्हें अनुशासित नहीं करती, यहां पे वातावरण खराब है और निसंदेह बच्चे भी खराब हैं। परन्तु अपने प्रेम में यदि आप शक्तिशाली मां हैं तो तुम्हारे बच्चे खराब नहीं होंगे। अब भी ये महिलाएं मेरे इर्द-गिर्द घूम रही हैं, क्यो?, मेरे पास शहद नहीं है पर वे मेरे करीब बैठी हुई हैं। और यह आत्म साक्षात्कार के बाद की स्थिति है।

परन्तु मेरे सारे भतीजे, बहुएं सभी आकर मेरे पास बैठ जाते हैं। लोग उनसे कहते हैं कि तुम्हें क्या हो गया है कि हर समय तुम अपनी आंटी के पास बैठे रहते हो, यह क्या है। प्रेम। वे समझते है कि जो भी कुछ उन्हें बताया जा रहा है वे उनके हित के लिए है। परन्तु इसके लिए स्वयं आपको ठीक होना होगा। मां के रूप में व्यक्ति को सहनशील होना पड़ता है और समझना पड़ता है। पर जब समझाने का समय हो तो उन्हें समझाना ही होगा। आप यदि सोचें कि उन्हें गुस्से से समझा सकती हैं तो ठीक है पर बच्चे को अच्छी तरह समझ आ जाना चाहिए। बच्चे का यह जान लेना आवश्यक है कि आप उसे और अन्य बच्चों को प्रेम करती है। यह बहुत सूक्ष्म बात है। एक बार मैं एक सहजयोगी के बच्चे को बाहर ले गई वह कह रहा था "मुझे यह चाहिए, मुझे वह चाहिए"। वे सभी कुछ खरीदना चाहरहा था मैं हैरान थी कि इस लड़के में क्या दोष है। यदि मैं अपने नातियों को

साथ ले जाऊं तो वे कुछ नहीं मांगते। मैं यदि उन्हें दो जोड़ी जूते दिलवाना चाहूँ तो वे कहेंगें कि "नहीं, एक ही काफी है"। वो कभी कुछ नहीं मांगते। यह एक प्रकार का आत्म सम्मान है। पत्नियां भी कुछ नहीं मांगती। पति उनसे कुछ लेने को कहते रहेंगें पर वे न लेंगीं। सहजयोगिनी मां, पत्नी और शक्ति को ऐसा ही होना है, उसकी कोई मांग नहीं होती वह कुछ नहीं मांगती। जो स्वयं दाता है, वह क्या मांगेगी? सदा देने वाली क्या कुछ मांगगे भी? सहजयोग में बायीं तरफ स्त्री की होती है। यह थोड़ा सा दुर्बल हो रहा है। इसे दृढ होना होगा।

बच्चों को सबसे पहले ध्यान करना और श्री माता जी का सम्मान करना सिखाइए। उन्हें सिखाइए कि किस प्रकार से सहजयोग को कार्यान्वित करना है, उनसे सहजयोग के बारे में बातचीत करनी है। केवल खाना, सफाई और दूसरों के साथ अच्छे व्यवहार की बात करना ही काफी नहीं है। अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाते हुए उन्हें बताना है कि किस प्रकार परस्पर बांटकर वो चीज़ों को लें। धर्म के विषय में उन्हें बताना है और यह भी कि किस प्रकार सौहार्द्र स्थापित करना है। सहजयोग को दृढ़ करने के लिए आपको यह सब समझना है। आप ही सहजयोग की शक्ति हैं और छोटी-छोटी चीजों की चिंता करने के स्थान पर आपको इसे कार्यान्वित करना होगा। कई बार मुझे महिलाओं के पत्र आते है जिन्हें पढ़कर मैं खिन्न हो जाती हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि वे कैसे सहजयोगी हैं।

हमारी सहजशैली इतनी आदर्श होनी चाहिए कि अन्य लोग इसे देखें और समझें कि अपने रोज़मर्रा के जीवन में हमने कितनी महान चीज पा ली है। आदि शक्ति हमारे दैनिक जीवन में भी कार्य करती हैं। छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीजों में भी आपको सदा प्रेम करना है। चाहे आप अगुआ हों या न हो हर समय आपको आवश्यक जानकारी होनी चाहिए। मैंने यह नहीं सीखा, मैंने वह नहीं सीखा। 'मुझे जो कुछ भी सीखना है बड़ी नम्रता पूर्वक सीखना है। जब तक आपका यह दृष्टिकोण नहीं हो जाती, तब तक अहम आपका पीछा नहीं छोड़ेगा। जब आप यह सोचेगें कि मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है तब इस अहम से आपका छुटकारा होगा। इस अहम के कारण आप स्वयं से ही संतुष्ट रहते हैं। यह अहम कि निशानी है। आप नहीं जानते कि अन्य लोगों को आप कितना कष्ट दे रहे हैं उनकी कितनी हानी कर रहे हैं। बस अपने से ही प्रसन्न रहते हैं। इस प्रकार का मस्त व्यक्तित्व व्यक्ति हवा में रहता है। आज मैंने किसी अन्य के लिए क्या किया? मैंने दूसरों से किस तरह बात की? क्या आज मैंने किसी को कुछ दिया? मुझे आपको कोई उपहार देने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी अपनी संतुष्टि के लिए मैं आपको उपहार देती हूँ। आप ही की संतुष्टि के लिए मैं आपसे उपहार लेती हूँ।अतः सोचें कि कहा और कैसे हमें संतुष्टि प्राप्त हो सकती है। किस कार्य से हमें संतुष्टि प्राप्त हो सकती है। मेरा घर, मेरे पति, मेरे बच्चे तो ठीक है। मेरा, मेरा, मेरा। जब तक यह "मेरा" किसी अन्य व्यक्ति में परिवर्तित नहीं हो जाता तब तक आप माया जाल में है। आपको यह सीखना है। आप सभी लोग अपनी डायरी में प्रतिदिन लिखें कि मैंने अन्य लोगों के लिए क्या किया, दूसरे लोगों से मैंने क्या कहा। अन्य व्यक्ति को कौन सी बात प्रसन्न करेगी? छोटी-छोटी चीज़ें जीवन को अति सुन्दर बना देती हैं।

यदि आप स्वयं को बहुत बड़ा न समझें तो बहुत बड़ी चीजें आपके लिए हैं। विशाल आकाश के सम्मुख यदि आप एक पत्ते को देखें तो पत्ता अपना अस्तित्व दर्शाता है। इसी प्रकार यहां वहां अपनी महान विशालता में खड़े एक व्यक्ति में सहजयोग का पूरा दिव्य स्वप्न निहित हो सकता है। परन्तु कितनी सुन्दर बात है कि हमारे इतने अधिक सहजयोगी हैं कि उनका नाम मात्र लेने से मैं प्रेम-सागर में शराबोर हो जाती हूँ। तो आपकी क्या स्थिति है?

हम ऐसा क्यों नहीं कर सकते, जबकि आधी शक्ति हमारे प्रतिबिम्ब के साथ है और उनकी सारी शक्तियां हमारे साथ हैं। मेरे इस दिव्य स्वप्न की विशालता में हम कितना कर सकते हैं। मुझे अधिक से अधिक लोग ऐसे चाहिए जिनका अपना कोई स्वप्न हो, अपने बच्चों और भोजन के विषय में सोचने वाले लोग नहीं चाहिए। वे तो सहजयोग से निकल जाएंगे।

मुझे आशा है कि आपको अपनी स्थिति का ज्ञान है। आप जानते हैं कि आप क्या हैं, आपके पास क्या है? आपके अन्दर बनाई गई कुण्डलिनी आपको सारा ज्ञान देती है। परन्तु बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो यह नहीं जानते कि उनके चक्र क्या हैं। अज्ञानता की उस चरम सीमा की कल्पना करें। इन सब चीजों का ज्ञान आपको होना आवश्यक है। आपको यह सब समझाना होगा क्योंकि यह श्रद्धा है, अन्ध श्रद्धा नहीं – ज्योतिर्मय श्रद्धा कि अब आपकी एकाकारिता दैवी शक्ति से हो गई है। मेरे विचार में यह पूजा अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि अभी तक गुरु पूजाएं हुई हैं। गुरु रूप में बहुत सारे लोगों की पूजा हुई है। मेरी जन्मदिन पूजा भी हुई है। पर आदि शक्ति पूजा कभी नहीं हुई। इस अवसर पर मैं सोचती हूँ कि कुण्डलिनी की अपनी उन शक्तियों को समझना, जो आपको परम चैतन्य की कृपा से प्राप्त हो चुकी है, अत्यन्त आवश्यक है। इससे आपको आत्म-विश्वास करना एवं एक दिव्य स्वप्न प्राप्त होगा जो आपके व्यक्तित्व को महान बना देगा। जार्ज वाशिंगटन या अब्राहमलिंकन क्या थे? वे तो केवल महान थे, परन्तु आप सबको तो आत्म साक्षात्कार प्राप्त हो चुका है। आपको पूरे ब्राहम, पूरी विशालता के विषय में सोचना होगा। जब तक आप में ऐसा मस्तिष्क विकसित नहीं हो जाता मुझे पूर्ण विश्वास है, तब तक सहजयोग की आन्तरिक और बाह्य उन्नति कम होगी। अतः समझें कि ये सारी शक्तियां आपके साथ है। नम्रता पूर्वक आपको इनका उपयोग करना है।

परमात्मा आपको धन्य करे।

श्री विष्णु पूजा
परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)
सेंट डेनिस, पैरिस
13.07.1994
'धर्म का आधार'

क्रोध के आधार पर जब स्वतन्त्रता प्राप्त होती है तो घृणा क्रान्ति का और इस स्वतन्त्रता का आधार होती है। परन्तु यदि आपके अन्दर ये स्वतन्त्रता जागरूक होती है और आप इन विध्वंसक शक्तियों के गुलाम नहीं रहते तो यह वास्तविक स्वतन्त्रता है। एक अन्य चीज जो फ्रांस में घटित हुई है वो यह है कि यूरोप में पहली बार सहजयोग को धर्म के रूप में मान्यता दी गयी है। यह बहुत बड़ी चीज़ है।

आज मैं सोच रही थी कि श्री विष्णु पूजा करेंगे। वे धर्म के आधार हैं। शिव के सिवाय किसी अन्य आधार की पूजा हमने कभी नहीं की। हम केवल अवतरणों की ही पूजा करते रहे। श्री गणेश अवतरण के रूप में आए, देवी अवतरण के रूप में आईं। राम, गुरू, ईसा, बुद्ध, सभी पृथ्वी पर अवतरणों के रूप में आए। परन्तु आज जब सहजयोग धर्म के रूप में स्थापित हो गया है हमें धर्म के आधार श्री विष्णु को समझना आवश्यक है। श्री विष्णु बाद में श्री राम, श्री कृष्ण और अन्ततः श्री कल्की के रूप में पृथ्वी पर आए। श्री विष्णु का यह अति सुन्दर विकास है।

तो व्यक्ति को समझना है कि धर्म का आधार क्या है? भौतिक पदार्थ की आठ सयोंजकताए (Valancies) होती है। ये नकारात्मक, सकरात्मक और तटस्थ होती है। पर मानव में दस सयोंजकताएं हैं, हमारे अन्दर इसकी सृष्टि श्री विष्णु ने की है। श्री विष्णु ही इनकी रक्षा, देखभाल और पोषण करते हैं। जब भी वे देखते हैं कि मानव का धार्मिक पतन हो रहा है, वे जन्म लेते है। विराट उनकी अन्तिम अवस्था है। इस अवस्था में विष्णु तत्व दो हिस्सो में बंट जाता है। एक विराट को चला जाता है और एक विराटांगना को। परन्तु तीसरा तत्व महाविष्णु है जो भगवान ईसा मसीह के रूप में अवतरित हुए। आज के समय में ये तीनों तत्व मुख्यतः सहस्रार में गतिशील है। विष्णु तत्व में आप देख सकते हैं कि आन्तरिक धर्म का सन्देश पूरे विश्व में फैल रहा है। मात्र इतना ही नहीं कि आधुनिक समय में यह कहा जाता है कि ऐसा करो, ऐसा न करो, आजकल दस धर्मादेश भी नहीं है। इन दस धर्म आदेशों को आपका स्वभाव बनना पड़ा। इस प्रकृति से आपकी पूर्ण एकाकारिता होनी आवश्यक है। विकास प्रक्रिया में इन धर्मों को स्थापित करना गुरू का कार्य था और इनकी स्थापना से मानव को धार्मिक बनाया गया था। परन्तु इस संसार में जो कुछ भी बताया गया है, शास्त्रों में लिखा गया है, जबानी जिसका वर्णन किया गया है, यदि यह सब जबानी जमा खर्च बन जाए तो पतन अवश्यंभावी हो जाता है। इसी कारण एक ही चीज के बारे में उपदेश देने वाले धर्म भिन्न दिशाओं में चले जाते हुए हमें दिखाई देते हैं। कुछ धर्म संचालित है और कुछ सत्ता संचालित है, कुछ हिंसक हो गए हैं और कुछ पूर्णतया असत्य हैं। इस पतन को जब आप देखते है तो आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि किस प्रकार मानव ने इस तत्व का नाश किया है। वे धर्म को स्वीकार क्यों नहीं कर सकते?

हमारे अन्दर दो जीन हैं, जो हमें अपने माता-पिता के प्रति अपराध करने से रोकते हैं। जब ये दोनों जीन उत्परिवर्तन (Mutation) में लग जाते हैं तो लोग स्वछन्दता से कार्य करने लगते है उन पर कोई नियंत्रण नहीं रह जाता, भारत के लोग मैं कहूंगी कि परम्परागत धार्मिक हैं। कारण ये है कि प्राचीन काल से ही हम धर्म की बात करते आये हैं, हमारे यहां सन्त हुए और फिर हजारों वर्षों में एक प्रकार की परम्परा बन गई उस समय मिश्र और यूनान देश भी हमारे साथ थे। उनमें कुछ खराबी आ गई। हम यूनान को ही लेते है, जब सारे देवताओं को मानव की तरह से बनाया जाता है। वे देवताओं का स्तर धर्म से अधर्म तक गिरा बैठे। मिश्र के शासकों की दिलचस्पी क्योंकि क़ब में मरने की थी इसलिए अपने अन्दर धर्म को बनाने के स्थान पर उन्होंने पिरामिड (Pyramid) बनाने शुरू कर दिये। यही कारण है कि मिश्र में धर्म का पतन हो गया और अन्ततः इस्लाम स्थापित हो गया। लोगों के अधार्मिक होने के कारण इस्लाम आया। यूनान में भी लोगों ने रुढ़ी वादी चर्च को स्वीकार कर लिया क्योंकि अपने अन्दर वे धर्म को न बैठा सके, तो इन लोगों के अन्दर वे धर्म को कैसे बैठाते?

विष्णु जी का नरसिंह अवतार यूनान और मिश्र के बहुत समीप पेशावर में हुआ। परन्तु ये लोग विष्णु के विरुद्ध हो गए क्योंकि उन्होंने समझा कि विष्णु ने उनके राजा का वध कर दिया

है। अतः ये सारे राक्षस अब अफगानिस्तान क्षेत्रों में प्रवेश कर गए और फिर मिश्र और यूनान चले गए। उन्होंने सारे देवी-देवताओं को यहां लाने का प्रयत्न किया। ये घटना कोई दस हजार वर्ष पूर्व की है। जब प्रहलाद श्री विष्णु के अवतरण को लाये थे। इन राक्षसो को असुर या असीरियन के नाम से भी जाना जाता है। यदि आप मिश्र जाएं तो आपको नरसिंही (Sphinx) मिलेंगे, इनका आकार नरसिंह से बिल्कुल विपरीत है। इनमें पुरुष ऊपर के हिस्से में है और शेर नीचे के हिस्से में, जबकि नरसिंह में शेर ऊपर के हिस्से में है और मानव नीचे के हिस्से में। विष्णु के नरसिंह रूप से ठीक उल्टी प्रतिमाएं उन्होंने यह दर्शाने के लिए बनाई कि हमारा एक अन्य प्रकार का अवतरण है जो विष्णु से लड़ सकता है। राक्षसों के इन लोगों के अन्दर प्रवेश कर जाने के कारण उनमें अत्यंत आक्रामक और युद्ध प्रिय स्वभाव विकसित हो गया। यूनान में लोगों ने अपना बाहुबल बहुत बढ़ा लिया और यहां का इतिहास तो वास्तव में पागल कर देने वाला है। एक मनुष्य का अनवरत युद्ध करते रहता। सदा वे एक दूसरे का संहार करते रहते थे। जब सिकंदर भारत में आया तो उससे यहां की धार्मिक सभ्यता देखी। वह आश्चर्य चकित था कि किस प्रकार ये लोग रहते हैं। मिश्र में भी लोग धर्म को बिल्कुल न समझ पाये क्योंकि वे मृत आत्माओं और काले जादू में विश्वास करते थे। जब इस्लाम आया तो उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। पहले ईसाई धर्म आया और फिर इस्लाम।

कहते है कि रूस का ज़ार कोई धर्म अपनाना चाहता था। अतः उसने पहले कैथोलिक लोगों को बुलाया और कहा कि यहां के सब लोगों को धार्मिक बना दो। विष्णु ही तत्व है परन्तु ये विकृत विष्णु स्वरूप यहां थे। एक-एक करके वे रूस में गए। सर्वप्रथम कैथोलिक गए और कहा कि आप कई पत्नियां नहीं रख सकते, आपकी केवल एक ही पत्नि होनी चाहिए। तो उन्होंने कहा कि यह बात हमें अच्छी नहीं लगेगी। विष्णु जी की केवल एक पत्नी थी "एकपत्नीव्रत"। राम के जीवन में भी यही बात थी। फिर उन्होंने मुसलमानों को बुलाया जिन्होंने कहा कि आप कई पत्नियां रख सकते हैं। पर शराब नहीं पी सकते तो वे कहने लगे कि वोदका के बिना हम कैसे जिएंगे। इन सारे धर्मों में धर्म जरा भी नहीं है। पहले में एक पत्नीव्रत और दूसरे में मदिरा निषेध। इस तरह से बन्धन में वे न जी सकते थे। अतः उन्होंने रूढीवादि ईसाईयों को निमन्त्रित किया। उन्होंने कहा जितनी मर्जी पत्नियां रखो और जितनी मर्जी शराब पियो। रूस के लोगों को यह बहुत अच्छा लगा और उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। बिना आत्म साक्षात्कार पाये लोगों पर जो भी बन्धन आप लगाते रहें वे इसके विपरीत ही कार्य करेगें।

मैंने मुसलमानों को देखा है। एक बार मैं रियाद से लन्दन जा रही थी कि मुझे नींद आ गई। आँख खुलने पर मैंने नग्न शरीरो वाली बहुत सी स्त्रियां और बो टाई पहने हुए फैशन वाले पुरुषों को देखा। मैंने एयर होस्टेस से पूछा कि "हम कहां रुके हैं"? उत्तर मिला "कहीं नहीं"। मैंने पूछा "ये लोग कहां से आये हैं"? उसने कहा "ये वही लोग हैं", रियाद में इन्होंने अपने चेहरे और शरीर ढंके हुए थे। स्त्री या पुरुषों को बन्धन लगाने का कोई लाभ नहीं। इससे एक घटिया किस्म के दम्भ की सृष्टि होती है। ईसाईयों का भी यही हाल है। ईसा को यदि आप पढ़े तो उन्होंने अत्यन्त महान बात कही है कि अन्यगमन (व्यभिचार) नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आपकी दृष्टि और मस्तिष्क भी अपवित्र नहीं होने चाहिए। अब ईसाई राष्ट्रों में स्त्रियां नग्न होती जा रही है और पुरुष उन्हें देखते हैं और सभी प्रकार की मूर्खताए हो रही हैं। क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि यही ईसाई हैं? और फिर रविवार को आप अपना हैट पहनकर चर्च जाते हैं। उन्हें किस प्रकार ईसाई कहा जा सकता है। धर्म तो बिल्कुल है ही नहीं। पश्चिमी देशों में लम्पटता पराकाष्ठा की सीमा तक पहुँच गई है। यह सब वह इस प्रकार करते हैं कि पशु भी नहीं कर सकते। पूरी जीवन शैली ऐसी है मानों अपने विनाश को खोज रहे हों। वे अपना विनाश करना चाहते हैं। भारत में ऐसा क्यों नहीं होता? क्योंकि वे जानते हैं कि ऐसा करना पाप है।

आप पादरी को एक बच्चे को गाली देता हुआ देख सकते हैं। कुछ शर्म करो। कैथोलिक चर्च के उच्च अधिकारी स्कूल तथा महाविद्यालय के स्तर पर ऐसा करते हैं। यह किस प्रकार का कैथोलिक है? कैथोलिक का अर्थ है "सनातन", "प्राचीन काल से आया हुआ"। वे कैसे स्वयं को कैथोलिक कह सकते हैं? वे लोगों की हत्या करते हैं, उनसे धन लेते हैं और माफिया से मिले हुए हैं। माफिया के अगुआ को इनाम देते हैं। क्या यही कैथोलिक चर्च है? क्या ईसा यही चाहते थे? बिल्कुल इसके विपरीत। यहां धर्म तो नाम मात्र भी नहीं। तो हम कहां जाएं?

यदि आप सोचते हैं कि बौद्ध बनना ठीक है तो वे तो सबसे बड़े भिखारी और धनलोलुप हैं। तो धर्म है कहां? धर्म अन्तःनिहित है। इसलिए आप में इस विष्णु तत्व का जागृत होना आवश्यक है, फिर यह तत्व कई ओर फैलता है क्योंकि विष्णु ही रोग मुक्त करते हैं। वे ही धनवन्तरी हैं, एक चिकित्सक। क्योंकि वे ही मानव के रक्षक हैं। यदि हम अपने धर्म की रक्षा करते रहे तो हम बीमार नहीं हो सकते, और किसी कारण यदि हम बीमार हो भी जाएं तो विष्णु जी रोग मुक्त करके हमारी रक्षा करते हैं।

वे यम भी है, अर्थात् हमारी मृत्यु के लिए भी वे ही जिम्मेदार है। निसन्देह शिव, जीवनतत्व, आत्मा को पहले जाना होता है और तब यम शरीर को सम्हालने के लिए आता है। श्री विष्णु ही निर्णय करते हैं कि आपको कहां भेजा जाना चाहिए। आपको अधर में ही लटके रहना चाहिए या नर्क में जाना चाहिए या स्वर्ग

में भेजा जाना चाहिए ये सब निर्णय महाविष्णु (ईसा मसीह) की सहायता से लिए जाते हैं। मृत शरीर जब पड़ा होता है, केवल उसके आत्मा को ले जाकर उचित स्थान पर रखने के समय ये कार्य किया जाता है। मान लीजिए कोई व्यक्ति अधार्मिक है, तो वे उसे ले जाकर नर्क में डाल देते है। परन्तु यह कार्य होने से पूर्व काली विद्या वाले लोग पहुँच जाते हैं और ऐसे शरीर की खोपड़ी ले जाते है, क्योंकि जलने के बाद भी खोपड़ी बाकी रह जाती है, या ये लोग हड्डियां उठा ले जाते हैं और यम के कार्य पूरा करने से पूर्व ही आत्मा को वश में करने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार वे उस व्यक्ति के आत्मा का दुरुपयोग दूसरों को हानि पहुचाने के लिए करते हैं। यह सबसे बड़ा पाप है। किसी की आत्मा को ले जाना और अन्य लोगों को सम्मोहित करने के लिए उसका दुरुपयोग करना घोर अधर्म है। ऐसे तान्त्रिक की मृत्यु के समय यम उसे भयंकर कष्ट देते हैं – आसानी से उसके प्राण नहीं निकलते, व्यक्ति तड़पता है, मृत्यु के लिए तड़पता है परन्तु उसे मौत नहीं आती। मृत्यु प्राप्त करना इस प्रकार के व्यक्ति के लिए अग्नि परीक्षा है। भयंकर तान्त्रिक होने का यह दण्ड है।

धर्म और अधर्म के माध्यम से पाप का विचार उत्पन्न हुआ। पाप के विषय में हमारे विचार कभी-कभी अत्यन्त उथले (सतही) होते हैं उदाहरणार्थ "अर्जुन जब युद्ध कर रहा था तो कहने लगा मैं इन लोगों का वध कैसे कर सकता हूँ, ये मेरे भाई है, सम्बन्धी हैं, मेरे चाचे-मामे है"। श्री कृष्ण ने कहा "वे तो पहले से ही मर चुके हैं"। ये किस प्रकार मृत है? क्योंकि वे अधर्म की तरफ हैं। परन्तु आप धर्म की ओर हैं और यदि आप धर्म के लिए लड़ते हैं तो मृत्यु होने पर भी आपकी रक्षा की जाएगी। परन्तु बहुत से धर्म ग्रन्थों ने इस बात को मूर्खता की हद तक खींचा है। वे कहते हैं कि "मृत्यु के बाद आपके शरीर को यदि दफनाया जाएगा तो पाँच सौ वर्ष के बाद आपका शरीर बाहर आ जाएगा और आप सुरक्षित हो जाएंगे।" पाँच सौ वर्ष के बाद उस शरीर का क्या शेष रह जाएगा? ईसाई, यहूदी और मुस्लिम तीनों धर्मों में इस प्रकार के मूर्खता पूर्ण विश्वास हैं और इसी कारण ये लोगों को दफनाते है। दफनाने का अर्थ है कि एक ओर तो आप पृथ्वी को घेर रहे हैं और साथ ही साथ वहां भूत भी रख रहे है। मैं आश्चर्य चकित थी कि पैरिस के मध्य में एक बहुत बड़ा कब्रिस्तान बनाया हुआ है। लोग यहा बैठ कर शराब पी रहे होते हैं। क्योंकि ज्यादातर शराबी आकर कब्रों के बीच बैठ जाते हैं और ये लोग इन्हें शराब पीने के लिए उत्तेजित करते हैं। हैरानी की बात है कि पश्चिम में मनुष्य को दफनाया जाएगा तभी वह ईसा की तरह से पुर्नजीवित होगा! ईसा तीन दिनों में पुर्नजीवित हो गए थे, शुक्रवार को उनकी मृत्यु हुई और रविवार की प्रातः वे पुर्नजीवित हो गए परन्तु किसी साधारण मनुष्य के शरीर को यदि आप पाँच सौ वर्षों तक कब्र में रखें तो उसका क्या शेष रह जाएगा? पर वे लोगों को दफनाये जा रहे हैं इस कारण से। केवल साक्षात्कारी लोगों को ही दफनाया जाना चाहिए, सर्वसाधारण लोगों को नहीं क्योंकि प्राय लोगों में इच्छाएं शेष होती हैं और उनकी आत्मा शरीर के आस-पास लटकी रह सकती है। तो क्यों आप इतने वर्षों के लिए शरीर को कब्र में रखें। कुछ समय पश्चात् कब्रों को खोद कर वहां घर बनाये जाते हैं और सारे भूत उन घरों में आ जाते हैं।

केवल धार्मिक होना ही काफी नहीं है। बहुत से लोग कुछ भी गलत कार्य नहीं करते, अति सनकी होते हैं, फिर भी वे संतुलित नहीं होते। वे अत्यन्त क्रोधी होते हैं और यदि क्रोधी नहीं होते तो एकान्त प्रिय होते हैं और हिमालय में जा बैठते हैं। परन्तु जो लोग धार्मिक हैं और एक बार जब उनका उत्थान विराट तक हो जाता है केवल उन्हीं लोगों के शरीर को सुरक्षित रखा जाना चाहिए। धर्म नाभी से मस्तिष्क तक जाता है और मस्तिष्क सारी नाड़ियों को आत्मा की शक्ति देता है। अतः आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति का पूरा शरीर चैतन्य चेतना से परिपूर्ण होता है। ऐसे शरीर को यदि दफनाया जाए तो उससे आपको सुगन्ध भी आ सकती है और दूर से आप जान जाते हैं कि यहां किसी सन्त को दफनाया गया है। स्मरण करें कि मेरे सात चित्रों पर प्रकाश पड़ रहा है। ये चित्र 'मियाँ की तकली' नामक गाँव में लिये गये। मुझे बताया गया कि एक सूफी सन्त 'मिया' की मृत्यु इस स्थान पर हुई थी तुरन्त मैंने चैतन्य लहरियाँ महसूस कीं और जब मैं मंच पर बैठी थी तो प्रकाश के रूप में मैंने इन्हें देखा, और उसने मुझ पर प्रकाश की किरण डालनी शुरू कर दी। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। परन्तु जब मैंने इन्हें ऐसा करने से रोका तो ये रुक गए। वे भूत नहीं बने, प्रकाश बन गए। जहां भी आवश्यक था वहां इन्होंने अपनी उपस्थिति को दर्शाया। तो हम भी किसी धर्म का अनुसरण कर रहे हैं।

सहजयोग में आपको विष्णु तत्व का अनुसरण करना पड़ता है। आप यह नहीं कह सकते कि "श्री माता जी हम ऐसा नहीं कर सकते उदाहरणार्थ विष्णु को धूम्रपान या तम्बाकू पसन्द नहीं है। उन्हें मदिरा, नशीले पदार्थ और मानवकृत बहुत सी औषधियाँ पसन्द नहीं है। कोई सहजयोगी यदि प्रति जीवाणु (Anti Biotics) लेता है तो उसे केद हो जाएगी। जो भी मात्रा या गुण हो हम बहुत सी दवाईयां नहीं ले सकते। स्वतः ही आप एक ब्राह्मण की तरह से हो जाएगें जो इस प्रकार की चीजों से दूर रहता है। तब आप किसी भी ऐसे स्थान पर न तो जाएंगे और न खाना खाएगे जहां लोग सहजयोग के विरुद्ध हैं या अधार्मिक हैं। मेरा ये बताना अनावश्यक है कि आपको स्त्रियों की ओर नहीं देखता। स्वतः ही आप ऐसा नहीं करेंगे। आपके धार्मिक चक्षु खुल जाएगें। न ही मुझे स्त्रियों को ये बताना होगा कि पुरुषों के पीछे न दौड़ें।

जब कुण्डलिनि उठती है और आपके मस्तिष्क पर छा जाती है तो चैतन्य लहरियों के माध्यम से आप समझते हैं कि ठीक क्या है और गलत क्या है। आप कोई भी गलत चीज नहीं लेते। चैतन्य लहरियां अगर ठीक नहीं है तो आप उस वस्तु का सेवन नहीं करते और नम्रता पूर्वक उसे लेने से इन्कार कर देते हैं। मुझे आपको ये नहीं बताना पड़ता कि ऐसा करो ऐसा न करो। स्वतः ही आप न तो किसी की हत्या करेंगे और न ही कोई पाप करेंगे।

यदि आप अभी तक परिपक्व सहजयोगी नहीं है तो शायद आप ऐसा करें, परन्तु परिपक्वता आने पर आप कोई गलत कार्य नहीं करेंगे और अपने गुणों का आनन्द लेगें। जिन खूबियों को हम गुण कहते हैं वे विष्णु तत्व है। हमारा यह कहना कि यह व्यक्ति सदगुणी है बहुत सीमित है। हो सकता है वह चित्रकला में अच्छा हो। परन्तु आपके सदगुणी कहने का अर्थ है कि यह सहजयोगी है। ईसा मसीह ने इस हद तक कहा कि यदि कोई आपके बायें गाल पर चांटा मार दे तो अपना दाया गाल उसकी ओर कर दो। अब इसके विषय में सोचिये! कितनी सूक्ष्मता से ईसाह मसीह धैर्य और सहनशीलता तक पहुचे। ईसाइ राष्ट्रों की ओर देखिए जिन्होंने पूरे विश्व में जाकर लूट खसूट की। स्पेन के लोगों ने आकर बहुत से लोगों की हत्या की, अंग्रेज भारत आये और बहुत से लोगों को मारा, फ्रांस के लोग अफ्रीकन देशों में गए और उन लोगों की हत्यायें की। क्या ये ईसाई हो सकते हैं? ये किस प्रकार ईसाई हो सकते हैं?

केवल आपका आक्रामक न होना ही काफी नहीं है। कोई यदि आपके एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल उसकी ओर कर दें। ईसा ने यह कहा। उन्होंने (ईसा) सारे धर्मादिश सहजयोगियों के स्तर तक लाने का प्रयास किया। आपसे सहजयोग सौंदर्य किस प्रकार चमक उठेगा? मैथ्यू के दूसरे अध्याय में लिखा है कि आप अपनी आत्मा की अभिव्यक्ति कैसे करेंगे? स्पष्ट लिखा है कि आपको कितना सहनशील, शान्त, करुणामय और स्नेहमय बनना है। हैरानी की बात है ईसा मसीह सम महान अवतरण को ईसाई लोग इतने निम्न स्तर पर ले आये। उन्हें ईसाई कहलवाने का कोई अधिकार नहीं। वे तो निम्न कोटि के मलेच्छ हैं। किस प्रकार उन्होंने अपनी संस्कृति का विनाश किया है! बाइबल में पॉल ने सारी शरारत की है। इस्लाम में जर्मया ने लिखा है कि जब मोज़ज़ दूर पहाड़ी से दस धर्मादिशों का संदेश लेकर आये तो उन्होंने यहूदियों को, आज दिखाई पड़ने वाले, सड़ेगले समाज में प्रवेश करते पाया। वे इतने कुपित हुए कि कहा कि "ये धर्मादिश आपके लिए दण्ड हैं।" उस काल में मोज़ज़ ने ही ये आदेश यहूदियों को दिये थे। परन्तु मुसलमान लोग इन्हें उल्टे सीधे ढंग से उपयोग कर रहे हैं। वे इतने झगड़ालू हो गए हैं कि परस्पर ही युद्ध किए जा रहे हैं।

यहूदी भी एक रक्षक की प्रतीक्षा कर रहे हैं, उन्हें ईसामसीह पसन्द नहीं। फिर भी उन्होंने ईसा की हत्या नहीं की। यह पॉल की शरारत थी। मोज़ज़ से इतनी अच्छी शहरीयत पाकर भी वे धर्म को पहचान न सके। अपनी शहरीयत को बन्द करके वे अत्यन्त धन लोलुप और कंजूस बन गए। वे किसी को पैसा उधार दे देंगे और वह व्यक्ति तब तक सूद दिए चला जाएगा जब तक उसकी समर्थ होगी, जब वह सूद न दे पाएगा तो वे उसके घर को जब्त कर लेंगे और उसे बेच देंगे। वे अत्यन्त क्रूर एवं कामुक बन गए। अतः फ्रायड नाम के राक्षस का जन्म हुआ। फ्रायडभी यहूदी था। उसने मनुष्य की दुर्बलता को समझ लिया, और अमेरिका में उसे मान्यता मिल गई। यहां तक कि वे लोग धर्म विवेक खो बैठे हैं। मां के बारे में जब उसने इतनी उल्टी सीधी बातें कही हैं, तो धर्म किस प्रकार हो सकता है? अब वे फ्रायड़ साम्राज्य का पतन लिख रहे हैं। बहुत सी पुस्तकें लिखी जा रही हैं। क्योंकि आप लोग परम्परागत नहीं थे इसलिए पश्चिम में इन विध्वंसक लोगों के माध्यम से बहुत से विवेकहीन धर्म आए। आपके अन्दर विश्वास पूर्णतया समाप्त हो गया। मैं हैरान होती हूं कि किस प्रकार लोग फैशन को अपना लेते हैं। वे कहते हैं कि फटे हुए पहनों तो लोग फटे कपड़े पहनने लगते हैं। एक उद्यमी इस कार्य को शुरू करता है और बाकी सब उसका अनुसरण करने लगते है। परम्परागत रूप से यदि आपने समझ लिया होता कि कौन सी वेशभूषा आप पर फबती है तो आप उसी को पहनते, परन्तु उद्यमी लोग जो आपको कहते हैं आप वही अपना लेते हैं, मानो आप में मस्तिष्क या समझने की सामर्थ्य ही न हो। परन्तु एक धार्मिक व्यक्ति न तो परिवर्तित होगा न धन बर्बाद करेगा और न ही ये सारी व्यर्थ की वस्तुएं जमा करेगा।

मैंने जब सहजयोग शुरू किया तो हिचकिचाते हुए सबको कहा कि अच्छा हो कि वे अपने सिर में तेल लगाया करें। अगले दिन आप इसे धो सकते हैं पर रात्रि के समय सिर में तेल डाले नहीं तो कुछ समय पश्चात सारे पुरुष गंजे हो जाएगे तथा स्त्रियां विग पहनेंगी। मैं एक माँ हूँ अतः मैं आपको सत्य बात बताऊंगी। बहुत कठिनाई से सहजयोगियों ने इस बात को स्वीकार किया। सिर में तेल डालना आवश्यक है क्योंकि तेल से ही बालों का पोषण होता है। स्वस्थ्य और समृद्ध होने के लिए सहजयोगियों को थोड़े से काम करने होंगे उन्हें बहुत अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ेगी क्योंकि वे धर्म पर खड़े हैं और परमात्मा के साम्राज्य में हैं। वे परमात्मा की सुरक्षा में हैं, विराट की सुरक्षा में हैं। फिर भी कुछ कार्य तो उन्हें करने ही होंगे।

सन्तुलन एवं विवेक प्रदान करने वाले धर्म को अपनाए बिना आपका उत्थान नहीं हो सकता। सहजयोग इतना महान है कि अधार्मिक लोगों को भी साक्षात्कार प्राप्त हो गया। उत्थित होने

पर अधर्म शनैः शनैः क्षीण हो जाता है । बहुत से लोग मुझे अपने भूतकाल के विषय में लिखने का प्रयत्न करते हैं। भूतकाल समाप्त हो गया है। इसे भूल जाओ, जिस चीज में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं वह मुझे आप क्यों बताना चाहते हैं? एक बार जब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया तो पिछला सब समाप्त।

कलयुग में मैंने विश्व में स्थिति को देखा, मुझे लगा कि इस दुर्व्यवस्था में लोगों की कुण्डलिनी को जागृत किये बिना धर्म को स्थापित नहीं किया जा सकता। जब तक सामूहिक रूप से आत्म साक्षात्कार नहीं दिया जाता धर्म स्थापित नहीं हो सकता। लोगों को यह बताना कि ऐसा करो, ऐसा न करो, व्यर्थ होगा। यह विचार बहुत सफल हुआ। मैं आप लोगों में अपने स्वप्न को साकार होते देख रही हूं। अतः विष्णु तत्व को स्थापित करना हमारे लिए कठिन कार्य नहीं है। हमें मात्र इसे पहचानना है। अचानक मैं पाती हूं कि सहजयोगी अत्यन्त नम्र हो गए हैं और अपनी प्रशंसा भी वे सुनना नहीं चाहते। आप लोगों को रोग मुक्त कर सकते हैं, आप धनवन्तरि हो गए हैं। आप लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं। विष्णु के सारे तत्व अब आपमें जागृत हो गए हैं, आप इनका उपयोग करें।

किसी ने कहा कि, "मैं जनता में कार्य नहीं करना चाहता क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरा अहम् वापस आ जाए"। वे इतने मधुर हैं। अहम् के बढ़ जाने का उन्हें भय है। मैंने कहा कि यह अहम् अब वापस नहीं आएगा क्योंकि अब वहां विष्णु विराट बनकर बैठे हैं। वे आपकी रक्षा करेंगे। आपको स्वयं में विष्णु पद प्राप्त हो गया है। आप विष्णु जी के एक हजार नामों को पढ़ें तो आप जान जाएंगे कि आपमें कितने गुण हो सकते हैं।

परमात्मा आपको आशिर्वादित करें।

गुरु पूजा
परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन
कबैला 24.07.1994
(सारांश)

आज आप सभी लोग गुरु रूप से मेरी पूजा करने के लिए एकत्रित हुए हैं। मेरे अन्दर गुरु के बहुत से गुणों का अभाव है, जैसे मैं आपके साथ अधिक सख्त या आपके प्रति कठोर नहीं हो सकती। मैं वास्तव में नहीं जानती कि किसी गलत कार्य करने पर आपको किस प्रकार दण्ड दूं। हो सकता है कि इसका कारण यह हो कि आम गुरुओं के शिष्य आत्मसाक्षात्कारी नहीं होते। आत्मसाक्षात्कारी न होने के कारण उन शिष्यों से सूक्ष्म समस्याओं के विषय में बातचीत करने में गुरुओं को कठिनाई होती है। मैं आजकल के कुछ गुरुओं को भी जानती हूं जो बहुत कठोर हैं। वे कहते हैं कि उन्हें घोर तपस्या और अपने गुरुओं के घोर अनुशासन में रहने के पश्चात आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ। कभी-कभी तो मुझे ऐसे शिष्यों पर दया आती थी जिन्हें अभी तक आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति नहीं हुई। उनके गुरु आत्मसाक्षात्कारी थे परन्तु थे बहुत कठोर।

कोल्हापुर में मैं एक व्यक्ति से मिली उसे एक मिनट में आत्मसाक्षात्कार मिल गया। उसने मुझे बताया कि उसके गुरु ने उसे एक महीने में आठ दिन व्रत रखने को कहा था। फिर उस गुरु ने उसे गांव में दत्तात्रेय का मन्दिर बनाने को कहा और प्रतिदिन और सायं उसे दत्तात्रेय की पूजा करनी पड़ती थी इतना पैसा खर्च करने के बाद भी उसे आत्मसाक्षात्कार नहीं मिला था। कहने लगा कि "आत्मसाक्षात्कार देने के लिए आप केवल दो मिनट लगाती हैं। ये क्या है? आप मेरे प्रति इतनी दयामय कैसे हैं?" मैं नहीं समझ पाई कि उसे क्या उत्तर दूं। उसके गुरु के विरूद्ध मैं कुछ बोलना नहीं चाहती थी क्योंकि कि मैं जानती हूं कि वह आत्मसाक्षात्कारी है। वास्तव में ये बहुत से गुरु और अवतरण मानव के सम्मुख असहाय होते हैं। सम्भवतः उनके इतने अच्छे शिष्य न हों जितने मेरे हैं, या शायद परमात्मा को खोजने वाले सभी अच्छे लोगों ने इस समय सहजयोगियों के रूप में जन्म लिया है। उन पर मुझे कभी कठिन परिश्रम नहीं करना पड़ा। कभी कहीं कोई एक व्यक्ति हमें भी ऐसा मिल जाता है जो हमें परेशान करने का या समस्याएं खड़ी करने का प्रयत्न करता है।

आधुनिक समय इतना विशिष्ट है कि इसमें लोगों को आत्मसाक्षात्कार देना बहुत सुगम है। मोज़ज़ ने पतित समाज के लिए नियम बनाये थे। उस समय यह कार्य बहुत कठिन था। इन नियमों को शहरियत कहते हैं। मुसलमानों ने इसे अपनाया। आज भी शहरीयत के अनुसार इतने कठोर दण्ड दिये जाते हैं कि आप

विश्वास नहीं कर सकते और सारे धार्मिक कानूनों का दबाव महिलाओं पर है। बाइबल में भी ईसा मसीह ने लिखा है कि "यह सारे दस धमदिश कुछ भी नहीं है आपको इन से परे जाना होगा।" वे कहते हैं "यदि आपकी एक आंख शरारत कर रही है या पाप कर रही है तो इसे निकाल दीजिए।" इसके द्वारा पूरे शरीर को अपवित्र करने का क्या लाभ, या यदि आपकी एक बाजू कोई गलत कार्य कर रही है तो अच्छा हो आप इसे काट दें नहीं तो एक बाजू के कारण पूरे शरीर को कष्ट उठाना होगा। उन्होंने कहा कि "व्यक्ति को अपवित्र नहीं होना चाहिए।" पर मैं कहूंगी आपकी दृष्टि भी अपवित्र नहीं होनी चाहिए। आपकी आंखों में यदि किसी स्त्री के प्रति कामुकता है तो आपने एक घोर पाप किया है और ऐसा करने वाले लोग नर्क में जाएंगे। अतः व्यक्ति की दृष्टि भी अपवित्र नहीं होनी चाहिए। एक अन्य बात जो उन्होंने कही वह यह कि यदि कोई आपको एक गाल पर चांटा मार दे तो आप उसकी ओर दूसरा गाल कर दें। मुझे जब इन नियमों का पता लगा तो मैंने कहा "ऐसे लोग विश्व में कहां मिल सकते हैं।" ये बहुत सूक्ष्म चीज है।

अन्तिम धमदिश बहुत ही अच्छा था, "आपको धर्मपरायण होना चाहिए," सभी धर्मशास्त्रियों और पाखंडियों अर्थात् पादरियों से अधिक धर्म परायण। मैं सोचा करती थी कि ऐसे लोग कहां मिलेंगे जो ईसा के कथन के थोड़ा सा नजदीक भी हों। उस वक्त इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

भारत में लोग संस्कारवश धार्मिक हैं या आप कह सकते हैं कि परम्परावश वे अत्यंत धार्मिक हैं। मेरे समय में दक्षिण भारत और महाराष्ट्र में हमारा परिवार अत्यन्त ही धार्मिक था और वातावरण भी बहुत ही धार्मिक था। फिर भी ईसा द्वारा बताई बात न थी। उदाहरणतया क्रोध को बहुत ही मूल्यवान गुण माना जाता था। लोग ऐसी बघारा करते थे कि मैं बहुत नाराज हूँ। निसन्देह भारत में ये कोई नहीं कह सकता कि 'मैं तुमसे घृणा करता हू' क्योंकि ऐसा कहना बहुत ही पापमय और मूर्खतापूर्ण समझा जाता है। किसी से घृणा करना अधार्मिक है। जब मोहम्मद साहब आये तो उन्होंने देखा, कि कोई भी चीज सफल नहीं है तो उन्होंने शहरीयत को अपनाया, इसे स्वीकार किया। कहने लगे ठीक है शहरीयत को कार्यान्वित किया जा सकता है। केवल महिलाओं को ही कष्ट उठाने पड़े पुरुषों को नहीं। कोई स्त्री यदि व्यभिचार करती थी तो उसे दण्ड दिया जाता था।

मैं जानती हूँ कि ये सारी बातें किसी पर थोंपी नहीं जा सकती। ईसा ने जो भी कुछ कहा वह ध्यान की अवस्था में कहा होगा। ईसा ऐसे लोगों से घिरे हुए थे जो उनकी हत्या करना चाहते थे और अन्ततः उन्होंने ईसा की हत्या कर दी। उस वक्त वे रोमन लोग अत्यंत क्रूर थे। तो वे कैसे कह सकते थे कि कोई यदि आपको एक गाल पर चांटा मारे तो दूसरा गाल उसकी ओर कर दो? वे अत्यंत क्रोधी स्वभाव के लोग थे।

कृष्ण ने स्पष्ट कहा कि क्रोध ही सारी बुराइयों को जन्म देता है। परन्तु उन्होंने ये नहीं बताया कि क्रोध आता किस प्रकार है। इसके बारे में उन्होंने कोई बात नहीं की कि आपका जिगर और आपका पालन पोषण ही आपके क्रोध का स्रोत है, ये दोनों चीजें आपको भयंकर क्रोध देती हैं। जब तक आप साक्षी रूप से स्वयं को नहीं देखते तब तक आपका आत्मसाक्षात्कार अर्थहीन है। अपने को स्वयं से अलग करके स्वयं देखें कि आप में क्या दोष है। मान लो कोई व्यक्ति अत्यंत क्रोधी है तो इस पर गर्वित होने या इससे दूसरों को काबू करने के स्थान पर, उसे चाहिए कि स्वयं को वश में करे। क्रोध सर्वप्रथम है। कोई भी व्यक्ति यदि संत बनना चाहता है तो उसे पता होना चाहिए कि क्रोध को कोई स्थान नहीं देना है। ऐसा किस प्रकार करें? सर्वप्रथम आप स्वयं को साक्षी रूप से देखें कि आपका आचरण कैसा है? उदाहरणार्थ बनावटी रूप से क्रोधित हो कर आप शीशे के सामने खड़े हो जाएं और अपने चेहरे को देखें कि कैसा लगता है। आप हैरान होंगे कि आपकी शक्ल बन्दर या चीते जैसी या उस पशु जैसी दिखाई देगी जो आप पिछले जीवन में रहे होंगे। तब आपको हैरानी होगी कि अभी तक भी अपने पूर्व जन्म की पशुता के चिन्ह आप साथ लिए घूमते हैं। दूसरी चीज अपने ऊपर क्रोध को निकालना होता है। जैसे हम सहजयोग में करते हैं, अपना नाम लिख कर हम इसकी पिटाई करते हैं। स्वयं पर क्रोधित हो कर आप देखेंगे कि आपने अपने क्रोध को जीत लिया है। क्योंकि क्रोधी लोग दूसरों को दुख देते हैं स्वयं को नहीं। निसंदेह कभी-कभी उन्हें अच्छा नहीं लगता और वे सोचते हैं कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, इस प्रकार उनमें बायीं विशुद्धि की समस्या (दोषभाव) उत्पन्न हो जाती है। परन्तु यदि आप अपने पर क्रोधित होने लगेंगे, "मैंने ऐसा क्यों किया, ऐसा करने की मेरी इच्छा क्यों हुई?' तो, आपको हैरानी होगी, कि आपका क्रोध कम हो जाएगा। शारीरिक रूप से भी आप देखें कि आपको जिगर की समस्या है। इस तरह से आप अपना सामना करें और कहें कि मुझे जिगर की इस समस्या से छुटकारा पाना है। मेरा शत्रु बन कर मेरे आध्यात्मिक विकास में बाधा डालने की इसकी हिम्मत कैसे हुई?

सर्वप्रथम साक्षी अवस्था विकसित करनी है। सहजयोगी के लिए ऐसा करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। परन्तु प्रायः सहजयोगी अन्य लोगों के लिए साक्षी अवस्था विकसित करते हैं। सहजयोग का द्वार सबके लिए खुला हुआ है, अतः कुछ पागल, अटपटे और कुछ दुष्टचरित्र व्यक्ति भी सहजयोग में चले आते हैं। आपको देखना है कि आप किस चीज की चिन्ता कर रहे हैं? क्या आप समस्या गुरत और बेकार किस्म के लोगों की, जिनके विषय में आप नहीं कह सकते कि यह सहजयोगी बनेंगे कि नहीं, चिन्ता कर रहे हैं या उन लोगों का आनन्द ले रहे हैं जिन्हें सहजयोग प्राप्त हो गया है।

क्रोध कभी-कभी लोगों को पागल बना देता है। आपकी

खोपड़ी में चढ़कर ये आपको पागल कर देता है। सहजयोग में भी कुछ पागल लोग हैं। परन्तु वे इतने पागल हो गए हैं कि अब उन्हें न तो क्रोध आता है और न ही वे कष्टदायी हैं। वे मात्र पागल हैं। ऐसे लोगों की चिन्ता आपको नहीं करनी चाहिए। अन्य लोगों को साक्षी भाव से देखने की जरूरत नहीं है। स्वयं को साक्षी भाव से देखें। मुझे लगता है, कभी-कभी अधिक तपश्चर्या के कारण भी क्रोध आता है। और अत्याधिक अतिवाद के कारण भी। कुछ सहजयोगी हर चीज के बारे में अत्यन्त कठोर हैं। यह पागलपन है। सहजयोग में सभी कुछ सहज है। यह स्वतः है, आपको कठोर नहीं होना। आपको तुनकमिजाज नहीं होना है। मैंने यदि काली साड़ी आदि न पहनने को कह दिया तो यह ब्रह्म वाक्य नहीं बन गया। कोई यदि काली साड़ी या काले कपड़े पहनकर आ जाए तो आप लोग उससे परे दौड़ने लगते हैं, ऐसा नहीं होना चाहिए। आप स्वयं गुरु हैं। हमें किसी भी व्यक्ति से क्यों डरना चाहिए, चाहे वो काला हो या सफेद हो या चाहे कुछ और हो? आपको भय क्यों होना चाहिए?

भय क्रोध का दूसरा पक्ष है। एक क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति सदा भयभीत होता है क्योंकि वह स्वयं को दूसरे में देखता है। उसे लगता है कि दूसरा व्यक्ति भी उसकी तरह से ही क्रोधी होगा और उस पर आक्रमण कर देगा। अतः वह सदा बचाव की भावना से ग्रस्त रहता है। सहज स्वभाव से हम निडर होकर रहते हैं। कहा गया है, कि "भय पाप का फल है" परन्तु मैं कहूंगी कि यह क्रोध का फल है।' उदाहरणार्थ, जो लोग अति आक्रामक होते हैं उनमें भय उत्पन्न हो जाता है। जिन देशों ने अन्य देशों पर आक्रमण किए उन पर शासन किया और जिन्हें अपने अहम् और क्रोध का अनुभव प्राप्त है वे अत्यन्त भयशील देश बन गए। विशेषतौर पर जो सिपाही युद्ध में जाकर बहुत से लोगों का वध करते हैं, वे डरपोक बन जाते हैं। अमेरिका में मैंने एक सिपाही से पूछा कि तुम्हें किस चीज का डर है? उसने कहा कि मुझे लगता है, क्योंकि मैंने बहुत से लोगों की हत्या की है इसलिए बहुत से लोग मेरी हत्या करेंगे, मैंने कहा "आप ऐसा क्यों सोचते हैं? आपकी कोई क्यों हत्या करेगा?" वह इतना भयभीत था कि जब वह मेरे सम्मुख आया तो वह कांप रहा था।

हमारी आक्रामकता हम पर ही दनदनाती है और हमें हर चीज का भय लगने लगता है। सहजयोग में आप स्वयं को एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में देखें। आपका भूतकाल समाप्त हो गया है, इसकी आपको कोई चिन्ता नहीं है। निर्भय अवस्था में अब आप रहे, यह अवस्था सहजयोग द्वारा प्राप्त करनी है। एक बार जब आप जान जाएंगे कि आप सुरक्षित हैं तो न आपको भय सताएगा और न ही आप क्रोधित होंगे। कभी-कभी हम इसके विपरित कर बैठते हैं।

यह सर्वसामान्य बात है कि एक आक्रामक व्यक्ति असुरक्षा भावना ग्रस्त कहलाता है। परन्तु वह तो दूसरों को असुरक्षित कर देता है तो वह कैसे असुरक्षित हो सकता है? आपको उसे बताना होगा कि वह पूर्णतया सुरक्षित है। आप यदि ऐसे व्यक्ति को कहें कि वह असुरक्षित है तो वह सोचता है, "हाँ मेरी दशा दयनीय है, मैं यदि किसी की हत्या कर दूं तो भी ठीक है क्योंकि मेरी अपनी दशा दयनीय है।" ऐसे विचार इस प्रकार कार्य करते हैं कि आप अपने विषय में विश्वस्त हो जाते हैं। परन्तु आपको साक्षी बनकर देखना चाहिए, देखना चाहिए कि मैंने अभी तक क्या किया है। क्या मैंने स्वयं पर विजय पा ली है? सहजयोग स्वयं पर विजय पाने के लिए है, दूसरों को जीतने के लिए नहीं। अगर आप ऐसा नहीं कर पाएं हैं तो आप स्वप्रमाणित है कि, "मैं एक सहजयोगी हूँ, मैं अति महान हूँ, आदि-आदि।" इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। क्या आपने स्वयं को परिवर्तित कर लिया है? क्या अब भी आपके सम्मुख लोग स्वयं को असुरक्षित मानते हैं? यदि लोग स्वयं को असुरक्षित समझते हैं तो उनमें कोई कमी है और यदि आप स्वयं को असुरक्षित पाते हैं तब भी कोई समस्या है। यदि आप मेरे सामने यह बहाना करते हैं कि श्री माताजी मैं असुरक्षित हूँ, तो आप सहजयोगी नहीं हैं।

गुरु बनने के लिए आपमें क्षमा करने का विवेक होना अत्यंत आवश्यक है। बुद्ध की तरह से एक बार बुद्ध किसी गांव में भाषण दे रहे थे अचानक किसी ने आकर उनको गाली देना शुरू कर दिया। किसी अन्य ने उस व्यक्ति से पूछा कि "आप ये अपशब्द क्यों कह रहे हैं? ये तो आत्मसाक्षात्कारी बुद्ध हैं। ये तो हमें अच्छा बनने में सहायता दे रहे हैं और तुम इन्हीं पर ही चिल्ला रहे हो।" तब उस व्यक्ति को पछतावा हुआ। वह बुद्ध से मिलने गया पर तब तक बुद्ध दूसरे गांव जा चुके थे। अगले दिन जा कर वह व्यक्ति बुद्ध के चरणों पर गिर गया। भगवान बुद्ध ने कहा "क्या बात है, आप मेरे चरणों पर क्यों गिर रहे हैं?" उसने कहा "मैं लज्जित हूँ, मुझे नहीं पता था कि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं, मैं आप पर चिल्लाया और उल्टी-सीधी बातें कहीं। कृपा करके मुझे क्षमा कर दीजिए।" बुद्ध ने कहा "आपने मुझे कब अपशब्द कहे।" उसने कहा "कल"। बुद्ध कहने लगे "कल तो समाप्त हो गया है, अब क्षमा करने के लिए क्या शेष है।" वह पछताता हुआ क्षमा मांगने के लिए आया पर बुद्ध ने कहा कि कल तो समाप्त हो चुका है।" यह महान गुण सहजयोगियों में भी होना चाहिए।

स्वयं को गुरू कहने के लिए आप में परिपक्वता होनी आवश्यक है। जैसे ड्रामा देखते हुए लोग बच्चों की तरह से ही-ही कर रहे थे न कोई परिपक्वता थी और न कोई सम्मान। निसंदेह आप हंस भी सकते हैं पर केवल तभी जब कोई हंसने की बात हो। परन्तु जब वे इतना अच्छा ड्रामा कर रहे थे तब इस तरह की बचकानी हरकतें करना और उनका मजाक उड़ाना!

स्त्रियों में यह आम देखा गया है। वे ऐसी चीज़ों पर हंसती हैं जिन पर उन्हें हंसना नहीं चाहिए। इससे पूर्व अपरिपक्वता झलकती है। पैसे के मामलों में भी ऐसा ही आचरण है।

धन के प्रति इतना मोह गुरु के लिए अच्छा नहीं है। मुझे बिल्कुल कोई मोह नहीं है। अन्दर से मैं पूर्णतः निर्मोह हूं। बैंकिंग और लेखा-जोखा मैं नहीं जानती। कोई अन्य हिसाब-किताब रखता है। सहजयोग में यदि आपको धन का मोह है तो आप अधिक ऊंचाई तक नहीं जा सकेंगे आप काध्यात्मिक उत्थान के लिए आये हैं। मैं आपको हिमालय में जाके ठंड में या सिर के भार खड़े होने के लिए नहीं कहती। मैं आपको कभी धन देने के लिए नहीं कहती। अपनी इच्छा से और प्रसन्नता से आप जो चाहें सहजयोग को सहयोग दे सकते हैं।

आपको आत्म निरीक्षण करके देखना है कि आपने सहजयोग के लिए क्या किया है, कितने लोगों को आपने आत्मसाक्षात्कार दिया है? आत्मसाक्षात्कारी होने के बावजूद भी इन गुरुओ में शक्ति नहीं थी। आपमें आत्मसाक्षात्कार देने की शक्ति है। कितने लोगों को आपने आत्मसाक्षात्कार दिया है? एक बार यदि आप ऐसा करने लगते हैं और दस बीस लोगों को ढूंढ कर आत्मसाक्षात्कार दे देते हैं तो आप महान गुरु बन बैठते हैं, अपने महान गुरुत्व के बारे में बातें करने लगते हैं और समझते हैं कि आप ही आदि शक्ति हैं। यह आज्ञा के स्तर पर होता है, निसंदेह बहुत से लोगों ने सहजयोग के लिए बहुत कार्य किया अन्यथा आज का दिन देखना सम्भव न होता। परन्तु जिन्होंने कुछ नहीं किया उन्हें मैं बता दूँ कि वे वहीं के वहीं खड़े हैं। आपकी कुण्डलिनी उत्थित हो गई लेकिन दूसरे लोगों को देने के लिए आपने कुछ नहीं किया। मैं जानती हूँ कि कुछ लोग ऐसे हैं जो दूसरों को जागृति नहीं देना चाहते क्योंकि वे सोचते हैं कि वे पकड़े जाएंगे। अहम् बढ़ने के डर से वे अन्य लोगों की देखभाल नहीं करना चाहते। सहजयोग में रहने का ये तरीका नहीं है। आपको कुछ न कुछ करना होगा। सहजयोग का प्रचार करना अत्यंत आवश्यक है। हम विश्वशान्ति, विश्व जागृति की बात करते हैं। पर हमने इसके लिए क्या किया। सर्वप्रथम अपने लक्षण सुधारिये और ये सुधार केवल निष्कपट आत्मनिरीक्षण और हर क्षण स्वयं को तथा अपने आचरण को साक्षी भाव से देखने पर ही सम्भव है।

बचपन से ही मैं दादी मां की तरह से थी। कोई मूर्खता, मूर्खता पूर्ण मजाक आदि मैं सहन न कर पाती थी। अब मैं दादी मां हूँ। आप में भी यह परिपक्वता आनी आवश्यक है। आदतवश घटिया तरीके से बातचीत करना कुछ लोगों के लिए ठीक है क्योंकि वे सहजयोगी नहीं है। परन्तु यदि कोई उनका अनुसरण करता है तो वह व्यक्ति परिपक्व नहीं है। यदि वे परिपक्व होते तो उन लोगों को भी परिवर्तित कर देते। परिपक्व व्यक्ति तो अपना और अन्य लोगों का आचरण सुधारते हैं। लोग उन पर हैरान होते हैं। ऐसे लोग गिने चुने होते हैं। इन घटिया लोगों के विषय में मैं इसलिए बता रही हूँ ताकि आप इन्हें सुनने और इनका अनुसरण करने का प्रयत्न न करें। परन्तु इस प्रकार के लोग अत्यन्त ढीठ किस्म के होते हैं और ऐसे बेकार सहजयोगी का अनुसरण सब लोग करने लगते हैं।

हममें परिपक्वता किस प्रकार आती है? ध्यान-धारणा एवं निर्विचारिता से हममें ध्यान धारणा आती है। उत्थान पाने के लिए आपका निर्विचार समाधि में होना आवश्यक है, इसके बिना आपका उत्थान नहीं हो सकता। क्या आप निर्विचार समाधि में रहने का अभ्यास करते हैं? मान ले सड़क पर चलते हुए आपने एक सुन्दर वृक्ष देखा, तो आपको निर्विचार हो जाना चाहिए। यह परमात्मा की रचना है। निर्विचारिता में ही सहज कार्यान्वित होता है, इसके बिना नहीं होता। आप जो चाहे योजना बनाएं और जो चाहे करें, यह कार्यान्वित न होगा। इसे यदि सहज पर छोड़ देंगे तो कार्य हो जाएगा। परन्तु इसका अभिप्राय यह भी नहीं कि आप कार्य के प्रति आलसी या अव्यवस्थित हो जाएं। आपको अत्यन्त चुस्त होना होगा, चुस्त हुए बिना आप न देख पाएंगे कि किस प्रकार सहजयोग आपकी सहायता कर रहा है? उदाहरणतया, आप किसी व्यक्ति से मिलना चाहते हैं और वह कहता है कि वह आपसे 11 बजे मिलेगा। तो आपको चौकस होना होगा। यदि किसी कारण आपको देर हो जाए तो आपको सतर्क होना होगा कि आपको देर हो गई। तब आपको बन्धन देना चाहिए और अपनी कुण्डलिनी उठानी चाहिए ताकि किसी भी तरह आप उस व्यक्ति से मिल सकें। यदि आप बन्धन देते हैं और कहते हैं कि मुझे वहां 11 बजे तक अवश्य पहुँचना है तो प्रायः आपको देर नहीं होती। सहज आपकी सहायता करेगा। परन्तु आप तो बन्धन देना, अपनी कुण्डलिनी उठाना और चैतन्य लहरियां देना भी भूल जाते हैं। परिपक्व होने के लिए सर्वप्रथम आपको समझना है कि आप सहजयोगी हैं और यदि आप परमात्मा की सर्वव्यापक शक्ति से जुड़े हुए हैं तो आप पूरी स्थिति को सम्भाल सकते हैं। यह अति साधारण बात है।

बहुत गर्मी थी, सबने कहा बहुत गर्मी है। मैं उठी और कहा मैं इसे ठंडा कर दूंगी। पन्द्रह मिनट में मैंने गर्मी भगा दी। यह 'मैंने' नहीं किया सर्वव्यापक शक्ति से मेरी एकाकारिता ने यह कार्य किया। परन्तु आपका यह सम्बन्ध सच्चा, दृढ़ और निष्कपट होना चाहिए तथा अपने मस्तिष्क में हर समय आपको यह ज्ञान होना चाहिए कि आप जुड़े हुए हैं। परमात्मा से अपनी एकाकारिता का आभास यदि हर समय आपको है तो यह अवस्था प्राप्त करना अत्यन्त साधारण है। चौकन्ने न होने के कारण परमात्मा की जिस महान शक्ति से आप जुड़े हुए हैं उसके

चमत्कार आप देखना नहीं चाहते। अन्य चीज़ों में आप व्यस्त हैं। आपका चित्त कहीं और है, दूसरी चीजों को आप देखते हैं और अचानक आप कह उठते हैं, "मैं कैसा सहजयोगी हूँ? मैं यह कार्य नहीं कर सकता"। अपनी ध्यान धारणा के माध्यम से निर्विचारिता में परिपक्व हों। निर्विचार समाधि में। बिना निर्विचार समाधि की अवस्था को बढ़ाये आप इसमें परिपक्व नहीं हो सकते और न ही निर्विचार समाधि में रह सकते है।

मैंने देखा है कि लोग सहजयोग से सभी प्रकार के चमत्कार और सब प्रकार की आशा करते हैं। पर वे-यह कभी नहीं सोचते कि हम क्या सहायता कर रहें है। हमारी उपलब्धि क्या है? हम है कहाँ? आज्ञा पर आपको अत्यन्त सावधान होना पड़ेगा। यह बात पुरुषों के लिए है, कि यदि बिना आज्ञा को पार किये यदि आप सहजयोग का प्रचार करने लगते है तो आप वास्तव में एक व्यर्थ प्रकार के व्यक्ति बन सकते है, सहजयोगी नहीं। नेतापन की बात एक मिथक है। और इस मिथक को इसकी वास्तविकता में ही देखा जाना चाहिए। आप अगुआ है या नहीं इस बात से कोई अन्तर नहीं पड़ता। परन्तु परिपक्वता आनी आवश्यक है। मैं यह सब इस लिए बता रही हूँ क्योंकि इस जन्म में मैंने किसी को दण्डित न करने का निर्णय किया है। अतः स्वयं को देखें। स्वयं को समझें और महसूस करें कि मैं आप सबको अच्छी तरह से जानती हूँ। पर मैं चाहती हूँ कि आप अपनी गलती को महसूस करें और देखें कि हम क्या उचित कार्य कर रहे हैं। सहजयोग का आंकलन इस बात से न करें कि आप इससे कितने लाभ उठा रहे हैं। यदि आपको सहजयोग से लाभ प्राप्त नहीं हो रहा है, तो आपमें ही कोई कमी है। इस बात को जब आप समझ जाएगें तो आप अधिक सूक्ष्म हो जाएंगें और आपकी स्थूल लिप्साओ का अस्तित्व नहीं के बराबर हो जाएगा। आपमें प्रेम होना चाहिए मोह नहीं। आपके अन्दर पूर्ण निर्लिप्सा आनी आवश्यक है और यह क्रोध से मुक्त होने पर ही सम्भव है।

दूसरी आवश्यकता उदारता द्वारा भौतिक चीजों के मोद से छुटकारा पाना है। किसी को कुछ दे देना बहुत अच्छी बात है। उदारता आनन्द के लिए है। एक बार जब आप उदारता का आनन्द लेने लगेगें तो आप जान जाएंगे कि प्रेम और करुणा आपसे दूसरो तक बहने लगें है। छोटी-छोटी बाते हैं। मैं जानती हूँ कि आप मुझ से प्रेम करते हैं और मुझे उपहार देना चाहते हैं। परन्तु यह प्रेम अन्य सभी लोगों तक फैलना चाहिए। आपको अन्य लोगों का पता होना चाहिए कि उनकी क्या आवश्यकता है और आपको क्या करना है। किसी को यदि कोई आवश्यकता है तो क्या आप उसको वह दे सकते हैं? क्या आप उसे प्रेम कर सकते है? क्या आप अन्य लोगों के बच्चों को कुछ दे सकते हैं? अच्छा होता कि यह उदारता आपमें होती। मैं उदारता आप पर थोप नहीं सकती सभी लोग कहते हैं कि श्री माता जी आप अत्याधिक उदार है। मेरे परिवार के लोग भी है। मुझे आवश्यकता से अधिक उदार समझते हैं। परन्तु आत्म निरिक्षण द्वारा आप लोग, निसन्देह उदार बन सकते हैं। यह उदारता बहने लगेगी। मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जिनके पास बहुत धन है पर वे एक पाई सहजयोग को नहीं देगें। उदार विवेक आपमें तभी आयेगा जब आप जीवन के लक्ष्य को जान जाएंगे और यह जान जाएंगे कि आप यहां किस लिए है? मात्र स्वयं को सहजयोग से परिपूर्ण करने के लिए या बिना किसी कर्त्ता भाव के इसके लिए कुछ करने की योग्यता पाने के लिए! ईसा ने कहा है "आपके दायें हाथ ने क्या दिया है इसका पता आपके बायें हाथ को नहीं लगना चाहिए"। "मैं" "मैं" "मैं" का बिगुल नहीं बजना चाहिए। ईसा ने जो कहा है उसे प्राप्त करने के लिए आपका आत्मसाक्षात्कारी होना आवश्यक है। मैथ्यूज़ का पांचवा अध्याय पढ़ें। यह इतना सूक्ष्म है कि हैरानी होती है कि ईसा के नाम पर यह धर्म इतनी विपरीत दिशा में कैसे चला गया है?

लोग गुरु बनना चाहते है क्योंकि उनके विचार में शक्तियां प्राप्त करके आप दूसरों पर हावी हो सकें, जो चाहे उन्हें कह सकें और उन्हें जैसे चाहें सता सकें। पहले गुरु अपने शिष्यों के प्रति अत्यन्त क्रूर हुआ करते थे। मैं एक बार अमरनाथ गई, वहां स्वामी जगन्नाथ मुझे मिलने के लिए आयें। उन्होंने कहा "मेरे गुरु ने कहा है कि आदि शक्ति अमरनाथ आ रही है और मैं उस समय वहा आने का प्रयत्न करुंगा"। उसका गुरु एक साक्षात्कारी व्यक्ति था जो वहां आया उसने पूछा "क्या वे आपके पास आयें या आप उनके पास जायेगीं।" मैंने कहा "देखिए मैं एक माँ हूँ, मैं गुरु नहीं हूँ", गुरु अपना स्थान नहीं छोड़ते वे इसे तकिया कहते है। गुरु को अपना स्थान नहीं छोड़ना चाहिए उसे वही बैठे रहना चाहिए और ताकि लोगों को उसके पास जाना चाहिए। मैंने कहा मैं माँ हूँ और मैं तुम्हारे साथ चलूगीं। मैं वहां जाकर उससे मिली और उस गुरु से पूछा "आप जगन्नाथ की आज्ञा को क्यों नहीं खोलते हैं"? मैंने कहा "आप गुरु हैं मालिक है"। वह कहने लगा "तो क्या हुआ, मेरे गुरु ने कभी मेरी आज्ञा को नहीं खोला, हर समय अपने अहम से युद्ध करके मुझे आज्ञा ठीक करनी पड़ी", मैंने कहा "पर आज्ञा को खोलना तो बहुत आसान है", तब मैंने उसकी आज्ञा खोली गुरु ने कहा, "आप माँ है, जो जी चाहे कीजिये, हम ऐसा नहीं करेंगे। आत्मसाक्षात्कार एवं आत्मविकास के लिए यदि आप उनसे कठोर परिश्रम नहीं करवाती तो वे कभी ठीक नहीं होगें। ये मानव ऐसे ही है।" मैंने कहा "मेरे लिए नहीं।" वह कहने लगा, "आप मां है, उन्हें क्षमा करती है, जो चाहे करें, उन्हें परिवर्तित करें या उनकी सहायता करे, पर मैं नहीं कर सकता"। उसने मेरे चरणों पर प्रणाम किया और कहने लगा "ये आदि शक्ति है, तुम इनके गुणगान करो।" जब हम जाने लगे तो बाबा जगन्नाथ ने

बताया, "श्री माता जी परमात्मा की कृपा से आपने मेरी आज्ञा को खोल दिया है।" मैंने कहा, "क्या हुआ था?" उसने कहा, "जब मैं आया तो मेरे गुरु ने मुझे दो थप्पड मारे। मैं उसका आश्रम चलाता था। फिर भी उन्होंने मुझे कुएं में एक रस्सी से बांधकर उल्टा लटका दिया। जिसे कभी वे कुएं में ज्यादा लटका देते और कभी वे ऊपर को खींच लेते। सात बार उन्होंने मुझे पानी में डाला और फिर बाहर निकाल लिया"। मैंने पूछा, "उसने ऐसा क्यो किया"? वह कहने लगा "मैं आपको बता दूं कि मैं कभी-कभी धूम्रपान करता था"। मैंने कहा, "उसने कभी आपको आत्मसाक्षात्कार नहीं दिया, तो आप धूम्रपान करते ही रहेगें"। कहने लगा "वे चाहते हैं कि बिगडी हुई आज्ञा के रहते हुए मैं सारी बुरी आदते छोड़ दूं। अब आपने मेरी आज्ञा को खोला है और मैं ठीक हूं। मुझे लगा कि उस गुरु का आचरण बड़ा ही अजीबो-गरीब है। जगन्नाथ ने बताया "वह सदा हमें पीटता है, और कोई भी कार्य करने के लिए हमें कठोर परिश्रम करना पड़ता है।"

मैं कुछ संगीताचार्य को भी जानती हूं जो ऐसा ही करते हैं। मैं बहुत से ऐसे लोगों को जानती हूं जो महान गुरुओं के पास गये पर उनके बारे जो सूचना मिली उससे मुझे आघात लगा। वे उन शिष्यों को साफ-साफ क्यों नहीं बताते कि तुममें क्या कमी है और तुम्हें कैसा होना चाहिये। पर गुरु कहते हैं कि यदि उन्हें इस प्रकार बता दिया गया तो वे नहीं सुनेंगे। मार खा कर ही वे सीखते हैं। शिष्यों के प्रति पूर्ण दृष्टिकोण ही करुणाविहीन है। कुछ गुरु अपने शिष्यों की भयंकर परीक्षा लेते हैं। राजा जनक ने जो किया उसके सम्मुख श्री रामदास कुछ भी नहीं। कठोर परीक्षा के बाद राजा जनक ने हज़ारों में से केवल एक शिष्य को आत्मसाक्षात्कार दिया। इतने अधिक झूठ-मूठ के गुरु होने का यही कारण है कि इन आत्मसाक्षात्कारी गुरुओं ने इन्हें दुत्कार दिया। इस समय बहुत से लोगों ने आत्मसाक्षात्कार पा लिया है। जबकि वास्तविक गुरु ऐसे है। मैं एक अन्य गुरु से मिली, उसने मुझसे पूछा "आप इन बेकार के लोगों को आत्म साक्षात्कार क्यों दे रही हैं? कितने लोग श्री माता जी के लिए प्राण दे सकते हैं?" मैंने कहा, "मुझे उनके प्राणों की क्या आवश्यकता है? मुझे इनके प्राण नहीं चाहिए।" यह पहला प्रश्न है। उसने कहा "मेरे पास ऐसे बहुत से लोग हैं जो मेरे लिए प्राणों की आहुति दे सकते हैं, फिर भी मैंने उन्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं दिया है।" इस स्थिति में, जो साधक वास्तविक गुरुओं के पास जाते हैं उन्हें भी आत्मसाक्षात्कार नहीं मिलता।

उनके पास बड़े-बड़े आश्रम हैं पर वे आत्मसाक्षात्कार नहीं दे सकते, और आप लोग दे सकते हैं। बात इस प्रकार है कि यदि आप दीपक में थोड़ा सा प्रकाश डाले तो यह स्वयं को प्रकाशित करता है, किसी अन्य चीज़ को नहीं। आपको अन्य लोगों को प्रकाश देना है, आप में शक्तियां हैं और आप यह कार्य कर सकते हैं। वास्तव में आप लोगों को परिवर्तित कर सकते हैं, उन्हें रोग मुक्त कर सकते हैं, पर आप ऐसा नहीं करते। सभी रोगियों को आप मेरे पास ले आते हैं और कहते हैं, "श्री माता जी इन्हें ठीक कर दीजिए"। आत्मसाक्षात्कार देने के लिए भी वे उन्हें मेरे पास ले आते हैं। क्या ज़रूरत है? आप सब जानते हैं कि किस प्रकार आत्मसाक्षात्कार देना है और किस प्रकार व्यक्ति को ठीक करना है। तो आप लोग यह कार्य क्यों नहीं कर सकते? पहला कारण यह हो सकता है कि हम अपेक्षित रूप से परिपक्व न हों, पर आप तो परिपक्व होते हुए भी अपनी शक्तियों को धारण नहीं कर रहे। आपको इस पर विश्वास नहीं है। नम्रता ठीक है, पर आपको ज्ञान आवश्यक है है कि यह शक्ति है क्या। मान लो एक राजा को आप सिंहासन पर बिठा देते हैं। इसकी अपेक्षा कि लोग उसके चरण स्पर्श करें, यदि वह लोगों के चरण छूता है तो यह मूर्खता है। जिस भी पद पर आप हैं आप नम्रता पूर्वक कार्य करें अर्थात करुणा पूर्वक। परिपक्वता यह है कि आपको अपनी शक्तियों का ज्ञान हो। अपनी शक्तियों को आप सुरक्षित रख सकें। पूर्णशान्ति में आप उत्थित हो सकें और जब लोगों से मिलें तो अपने अन्दर शक्तियों को धारण कर सकें। मैं एक घरेलू स्त्री हो सकती हूं, अपने नातियों के लिए खाना बना सकती हूं, परन्तु जब एक बार मैं कुर्सी पर बैठूंगी तो मैं जानती हूं कि मैं क्या हूं? आप जो भी है, क्लर्क, बर्तन धोने वाले या कुछ ओर। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। पर एक बार यदि आप सहजयोगी बन गए तो बन गए। तब आपको अपनी गरिमा दिखानी होगी। दुर्बलताओं को लिए नहीं घूमना होगा। आप इन सब आत्मसाक्षात्कारी लोगों से कहीं अच्छे हैं जिन्हें साक्षात्कार प्राप्त करने में हजारों वर्ष लगे, क्योंकि आपके पास बहुत शक्तियां है। फिर भी आपमें आत्मविश्वास और शक्तियों को धारण करने का 'क्षेभ' नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं कि हम अहम से डरते हैं। आपको अहम किस प्रकार हो सकता है। अब यह समाप्त हो गया है। आप यदि कुछ गलतियाँ भी करते है तो भी कोई बात नहीं। आत्मविश्वास की कमी के कारण सहजयोग में भी आप अपने प्रति कठोर हो जाते हैं। आप में यदि आत्मविश्वास है तो आपको कठोर होने की क्या आवश्यकता है? यह सब साथ-साथ चलता है।

सर्व प्रथम आपका परिपक्व होना आवश्यक है। इसके साथ-साथ आप में आत्मविश्वास होना चाहिए ताकि निर्भय होकर आप सहजयोग का प्रचार कर सकें। कुछ लोग स्वयं से भयभीत है और कुछ दूसरों से। यह आपके बन्धनों और परवरिश की भी देन है।

आज की गुरु पूजा अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि सभी ने

कहा, "श्री माताजी आपको सख्त होकर सबको बताना है।" मैंने कहा, "ठीक है मैं उन्हें बता दूंगी।" परन्तु आपको नीचा दिखाने के लिए नहीं, आपको यह बताने के लिए कि आप क्या प्राप्त कर सकते हैं, आपको यह बताने के लिए कि आप किस सीमा तक जा सकते हैं। आप में से कुछ लोगों की दस ब्रह्माण्डो को परिवर्तित करने की क्षमता है। परन्तु आप अभी तक स्वयं से लिप्त हैं, अपने बारे में, अपने बच्चों के बारे में, अपने पति आदि के बारे में चिन्तित है। जितना भी आप उत्थित होना चाहेगें यह शक्ति आपको उतनी सामर्थ्य देगी। परन्तु हमारे साथ समस्या यह है कि न तो हम स्वयं को पहचानते हैं न ही स्वयं को पहचानना चाहते हैं। आज की गुरु पूजा आपको गुरु पद प्रदान करे। यदि आप चाहेंगे तो ऐसा हो सकता है। परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति इसे पूर्णतया कार्यान्वित कर रही है और आपसे कही अधिक यह दैवी शक्ति चाहती है कि यह पूरा विश्व, पूरा ब्रह्माण्ड परिवर्तित हो जाए। अब आप लोग माध्यम है और यदि आप ही स्वयं को धोखा देना चाहें तो कौन रोक सकता है? संगीत, सहजयोगियों का साथ आदि का आनन्द लेना या अपने परिवार और बच्चों की सुरक्षा की अपेक्षा करना आदि सन्तोषजनक नहीं है। यह कभी आपको सन्तुष्ट न कर सकेगें। प्रकाश बनकर अन्य लोगों में प्रकाश बांटना और उनके लिए ही कार्य करना ही आपको सन्तुष्ट कर सकेगा। आपमें यह शक्तियां है। मैं बार-बार यह आपको बता रही हूँ कि आपमें वह शक्तियां है जिनसे आप आत्म निरिक्षण कर सकते है, साक्षी भाव से आप स्वयं को देखते हुए समर्पण कर सकते हैं, क्योंकि अब आप सहजयोग के विषय में मानसिक रूप से विश्वस्त हो गये हैं। भावनात्मक रूप से आप विखस्त हो चुके हैं कि सहजयोग ने आपको प्रेम और करुणा का विवेक प्रदान किया है। शारीरिक रूप से भी आप जान गए हैं कि सहजयोग ने आपको सुन्दर स्वस्थ्य एवं विश्वास प्रदान किया है और अब आध्यात्मिक रूप से भी आपको विश्वास होना कि, आप परमात्मा द्वारा चुने हुए आध्यात्मिक लोग हैं। क्योंकि आपके पूर्व जन्म महान साधना मय थे इसलिए आप यह सब प्राप्त कर रहे हैं। अतः धारण करे। अपने व्यक्तित्व को धारण करना आवश्यक है। आप अवश्य ध्यानधारणा करें। पूर्ण निर्विचार अवस्था में रहते हुए, सदा अपने चित्त को चौकन्ना रखे। किस वक्त क्या आवश्यकता है इसका ज्ञान होना आवश्यक है। हमें किस प्रकार प्रतिक्रिया करनी है? हर समय, हर क्षण जब आप चौकन्ने होते हैं और परमात्मा की सर्वव्यापक शक्ति की चेतना आपको होती है तब यह गुण आपमें होते हैं। मैं बिल्कुल चिन्ता नहीं करती। कभी नही। सभी लोग मुझ पर हैरान है, मेरी चिन्ताए ले ली गयी हैं। लोग कहते हैं कि आप बहुत अधिक यात्राएं करती हैं। मैं कभी यात्रा नहीं करती। यहां भी मैं बैठी हूँ और वहां भी बैठी रहती हूँ। क्या फर्क पड़ता है? मैंने कहां यात्रा की?

निर्विचार समाधि वह सुन्दर अवस्था है जो आपको प्राप्त करनी है। जीवन-नाटक और भिन्न प्रकार के लोगों को साक्षी भाव से देखते हुए उनका आनन्द लेने के लिए यह आपको शक्ति एवं साक्षी भाव प्रदान करेंगी। यह गुण आप अपने अन्दर विकसित होने पर ही प्राप्त करेंगे। सहजयोगी के लिए आवश्यक है कि दूसरों के अवगुण देखने के स्थान पर अपने अवगुण देखे और दूर करे। मुझे बहुत से पत्र मिलते हैं कि फलां स्त्री या फलां अगुवा मुझे परेशान कर रहा है। मैं हैरान हो जाती हूँ। ज्यो ही किसी अगुवा में मुझे कोई कमी नजर आती है मैं उसे बदल देती हूँ। मैंने सदा ऐसा किया है। परन्तु आप अपना चित्त किस प्रकार अगुवा पर देते है। वह ईर्ष्या से होता है। अगुवा यदि आपको बताता कि आप में यह त्रुटि है तो आपको उसके प्रति धन्यवादी होना चाहिए। आपको बताने वाला कौन है? मुझे आप पर बहुत गर्व है और अत्यन्त प्रसन्नता है कि किसी गुरु के भी इतने अच्छे शिष्य कभी नहीं हुए। परन्तु जब मैं देखती हूँ कि आप लोग यह नहीं समझ पाते कि आपको क्या प्राप्त हो गया है और इसे कार्यान्वित भी नहीं करना चाहते तो मुझे ईसा का दृष्टांत याद आ जाता है कि कुछ बीच चट्टान पर जा गिरे।" मैं जानती हूँ कि आपके स्नेह और प्रेम के विषय में जो भी मैं महसूस करती हूँ उसकी अभिव्यक्ति करना असंभव है। आप नहीं जानते कि आपको क्यों आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ? आप यहां क्यों है? और आप में क्या गुण हैं? आपको क्या प्राप्त करना है? यही आपको जानना है। ईसा की तरह मैं नहीं कहती, "एक आंख निकाल लिजिए, अपना हाथ काट दीजिए।" आपका शरीर सही सलामत होना चाहिए। कुछ भी काटना नहीं है। हमें इस शरीर की आवश्यकता है। सूक्ष्म रूप से ईसा ने कहा था कि आपका शरीर जो भी गलती कर रहा है आप सूक्ष्म रूप से इसे नकार दें।

इसी प्रकार यदि ईर्ष्या है तो इसका कारण खोज निकालें। आप ईर्ष्यालु क्यों है और अगुआ के विरोधी क्यों हैं। अगुआ किसी को यदि एक शब्द भी कहता है तो वे तुरन्त मुझे पत्र लिखते हैं। यदि उसे कुछ बताना ही नहीं है तो उसके अगुआ होने का क्या अभिप्राय है। इसके बाद अब आपने उन्नत होना है। सन्तुलित रूप से उन्नत होना है। बिना कुण्डलिनी जागृत करने की शक्ति प्राप्त किए जिन लोगों को आत्मसाक्षात्कार मिला है वे भी बहुत कार्य कर रहे हैं, जबकि आपके पास तो कुण्डलिनी जागृत करने, लोगों को रोग मुक्त करने और सहजयोग की बात करने की शक्ति है, आप अत्यन्त विवेकशील हैं, फिर भी आपका चित्त कहां है?

स्वयं गलतियों को देखना अत्यन्त आवश्यक है। आखिर कार आप सब युगों से सत्य साधक हैं, अब आप आये हैं और सत्य को प्राप्त किया है। अतः सत्य और वास्तविकता से तदातम्य करने का प्रयत्न करें। यदि आप सत्य एवं वास्तविकता

से तदातम्य कर लेते हैं तो आपका सहसार पूर्णतया खुल जाता है। सत्य आपके सहसार में है। जब सत्य आप में आ जाता है तो आप हैरान हो जाते हैं कि सत्य ही प्रेम है और प्रेम ही सत्य है, शुद्ध सत्य। यह अत्यन्त आनन्ददायी है और आप पूर्ण निरानन्द को पा सकते हैं यदि आप इस साधारण समीकरण को समझ ले कि "पूर्ण सत्य ही पूर्ण प्रेम है"।

मुझे कोई आशा नहीं है। मैं पूर्णतया सन्तुष्ट हूँ। मैंने अपना कार्य कर दिया है, अब यह सभांल लिया जाना चाहिए। आपको जिम्मेवार बनना होगा। इस बार मुझे बहुत प्रसन्नता हुई क्योंकि जहां-जहां मैं गई अणुवा-गणों ने कहा कि "श्री माताजी आपको अब यात्रा करने की कोई आवश्यकता नहीं, हम जिम्मेवारी लेंगे और इसे कार्यान्वित करेंगे।" आप सबको चाहिए कि अपने अगुआ का साथ दें और उनके तथा सहजयोग के लिए कुछ करें। कई बार अगुआगण यह नहीं समझ पाते कि लोग अपने व्यक्तिगत विचार क्यों लिए हुए हैं। जी जान से कार्य करें। उदाहरणतया भारत में जब हमने दासत्व उन्मूलन करना चाहा तो सभी ने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सहयोग दिया। परन्तु कुछ लोग है जो अगुआओं को नीचा दिखाने, उनका मज़ाक करने तथा समूह बनाने में लगे हुए हैं। क्या इसी प्रकार हम लक्ष्य प्राप्त करेंगे? आप सब अगुआ को सहयोग दें। अगुआ जो कहे उसे करने का पूर्ण प्रयत्न करें। उसमें यदि कोई दोष है तो मैं उसे ठीक करुंगी। पर आप दोष खोजने का प्रयत्न न करें।

सहजयोग सेना नहीं है। यह सीधा सच्चा माँ का प्रेम है। निसन्देह हर माँ चाहती है कि उसका बच्चा महान हो और उसकी सारी शक्तियां उसे मिलें। इस कार्य को वह कैसे करती हैं यह उस पर निर्भर है तथा आप इसे किस प्रकार करते हैं, यह आप पर निर्भर है। मैं सदा आप सब आत्मसाक्षात्कारी लोगों के सम्मुख नतमस्तक हूँ क्योंकि मेरे विचार में पृथ्वी पर इतने अधिक सन्त कभी न थे। पर यह साधुत्व पूर्ण होना चाहिए। इसके बिना, पूरे देश की बात तो छोड़ दीजिए, आप अपने परिवार को परिवर्तित नहीं कर सकते, पूरे विश्व का तो प्रश्न ही नहीं होता। अपनी जागृती एवं अध्यात्मिकता को उन्नत करना और सहजयोग को इस स्वचालित आन्दोलन के पूर्ण सहयोग एवं समर्पण देना अब आवश्यक है। संक्षिप्त में आप अपनी पूजा करें।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

ईस्टर पूजा प्रवचन आस्ट्रेलिया
03.04.1994
(सारांश)

ईस्टरपूजा के विषय में बताते हुए श्री माताजी ने कहा कि आस्ट्रेलिया और पूरे विश्व के लिए यह पूजा महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसमें एक महान संदेश है, जिसका वास्तविकरण हम कर चुके हैं। हमें ईसा के संदेश को समझना है। श्रीमाताजी ने बताया कि समाचार-पत्र में वह पढ़ रहीं थी कि किस प्रकार लोग ईसा के संदेशों को अस्वीकार कर देते हैं। ऐसा करने वाले वे कौन हैं? मात्र लेखक होने के कारण उन्हें ऐसी बातें करने का क्या अधिकार है। जो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं है उन्हें आध्यात्मिकता के विषय पर लिखने का कोई अधिकार नहीं है। आध्यात्मिकता उनके मस्तिष्क से परे की बात है।

श्रीमाताजी ने कहा कि यह कितने आश्चर्य की बात है कि वे इस पूजा का आयोजन आस्ट्रेलिया में कर रही हैं। मूलाधार की धरती पर। मूलाधार जहाँ मूलाधार स्थापित किया गया और बाद में वह ईसा के जीवन में आज्ञा चक्र पर प्रकट हुआ। सभी अभारतीय देशों में सहज योग की सबसे अधिक उन्नति आस्ट्रेलिया में हुई है। अब सबसे अधिक उन्नति रूस में हुई है जो कि पूर्वी खण्ड के देशों की दायीं आज्ञा है। दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में अधिकतर चीनी जाति के लोग हैं। वे बुद्ध की पूजा करते हैं जिनका स्थान बाईं आज्ञा पर है। बुद्ध से प्रभावित थाईलैण्ड, हांगकांग, तैवान आदि देशों की देखभाल में आस्ट्रेलिया सहायता कर रहा है। यह सब एक योजना की तरह कार्यान्वित हो रहा है।

एक बहुत बड़े सन्त हुए हैं जिन्होंने कोई घोर पाप किया। परिणाम स्वरूप परमात्मा ने अभिशप्त करके उन्हें भारत और अफ्रीका के बीच की पृथ्वी पर भेज दिया। तब इस पृथ्वी का पतन इस स्तर कर दिया गया और उस सन्त को कहा गया कि इसके लिए कुछ करे। उस सन्त का नाम त्रिशंकर था जो कि अब दक्षिणी क्षेत्र के सितारे हैं और जिनका वर्णन पुराणों में है। परमात्मा ने दण्ड के फलस्वरूप उस संत को पृथ्वी के इस क्षेत्र के ऊपर लटकता हुआ सितारा बना दिया और उससे कहा गया कि जा कर वहां के मानव के लिए स्वर्ग की रचना करे।

आस्ट्रेलिया में बहुत सी अच्छी बातें हैं। एक तो यह कि हम बहुसंस्कृतिक समाज से सम्बन्धित हैं जहां दूसरी संस्कृति की रक्षा की जाती है और जहाँ न्याय प्रणाली द्वारा लोगों की रक्षा की जाती है। बहुसंस्कृतिक समाज का विकास करने के लिए यह बहुत अच्छी बात है और यह राजनीतिक विचारों के पुनरुत्थान द्वारा आता है। लोगों को अपने आस-पास की संस्कृति के बारे में जिज्ञासा और ज्ञान है। इससे प्रकट होता है कि हमारे जीनस में सामूहिकता की भावना है, तथा हमारा देश अभी भी बहुसंस्कृतिक समाज में विश्वास करता है। यह सब चीजें श्री गणेश के गुणों को अभिव्यक्त करती है।

यदि 10 ऐसे लोगों का समूह है जिनमें श्री गणेश की पवित्रता नहीं है तो वे इकट्ठे नहीं रह सकते क्योंकि, उनमें हमेशा झगड़ा होगा, लोग बहुत ही उथले बन जायेंगे। पति-पत्नी के बीच का सम्बन्ध श्री गणेश द्वारा स्थापित किया जाता है। वे हमेशा वैवाहिक जीवन का आनन्द लेने का ज्ञान प्रदान करते हैं।

पुनरुत्थान मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य है। जीवन के प्रलोभनों से मानव को ऊपर उठना है। ईसा मानव के रूप में आये पर वे मानव न थे, क्योंकि उनमें भौतिकता नहीं थी। वे ओंकार थे, इसीलिये वे पानी पर चल सके। क्राइस्ट का संदेश पुनरुत्थान था जो कि बहुत महत्वपूर्ण है। यहां पर आपको तीन दिन का अवकाश मिलता है। पर जो लोगों को करना चाहिए वे उसके विपरीत करते हैं। ईसा हमारे आदर्श होने चाहिए। पवित्र दृष्टि किस प्रकार सम्भव है? पश्चिमी देशों के लोगों की आँखें तो कामुकता और लालच से परिपूर्ण हैं।

इसाई राष्ट्रों के साथ मुख्य समस्या यह है कि वे अत्यधिक भौतिकतावादी बन गये हैं, लोगों की आँखें देखती हैं और प्रतिक्रिया करती हैं, वे साक्षी नहीं हो सकते। विचार और प्रतिक्रिया व्यक्ति को पशुत्व के निम्नतम स्तर तक ले जा सकते हैं। सहजयोग में श्री माताजी के जीवन काल में ही, पृथ्वी पर निश्छल लोगों के एक नये विश्व की सृष्टि कर दी गयी है। हम सभी को यह महसूस करना चाहिए कि हम उच्च प्रकार के लोगों में से हैं और सहजयोगियों के लिए इसमें फंसने का कोई औचित्य नहीं है क्योंकि हम इस सब से परे हैं। सहजयोगियों ने नई तरह की सुन्दरता और शुद्धता के विवेक का विकास किया है, जो कि हमारी विशेषता है और जो हमारी अन्तःशक्ति है।

ईसा विश्व के आधार हैं। यह पवित्रता, यह मंगलमयता एक अण्डे के रूप में बनाई गई और फिर इसे दो भागों में तोड़ा गया। पहला आधा भाग श्री गणेश हैं और दूसरा आधा भाग विकसित होकर परिपक्व अवस्था में ईसा बना। श्रीमाताजी ने कहा कि कुछ लोग कह सकते हैं कि एक अण्डा दो रूप में कैसे हो सकता है। मगर हमें यह अवश्य याद रखना चाहिए कि यह सब दैवी घटनायें हमारे सांसारिक विश्व से अलग हैं। ईसा की मृत्यु नहीं हुई। जैसे कहा जाता है, उनका शरीर काश्मीर में हो सकता है, पर वे तो आत्मा हैं और आत्मा एक महान जीवन्त व्यक्तित्व होता है। अन्य अवतरणों को मानव की तरह कार्य करने पड़े पर ईसा ने कभी इन दैवी अवतरणों की तरह आचरण नहीं किया। श्री राम अपनी पत्नी के लिए रोए, श्री कृष्ण ने बार-बार विवाह किए क्योंकि उनकी पत्नियां ही उनकी शक्तियां थी। अवतरण होते हुए भी इन्हें मानव सम कार्य करना पड़ा। पर ईसा ने ऐसा कभी नहीं किया। दैवी व्यक्ति के रूप में वे जिये और दैवी व्यक्ति के रूप में ही मृत्यु को प्राप्त हुए। सहजयोगियों का भी अब सर्वसाधारण मानव से देवत्व स्तर तक उत्थान हो गया है। ईसा के लिए यह स्थिति प्राप्त करना सुगम था। पर हम लोग तो मानव जीवन से उच्च जीवन की ओर आ रहे हैं, क्योंकि हम अपने मस्तिष्क के स्तर से परे जा रहे हैं। यह कठिन कार्य नहीं है, हमें स्वयं को वहां महसूस मात्र करना है।

हम अपने आन्तरिक अस्तित्व के विषय में जानते हैं। कुण्डलिनी से हम पवित्र हो गए हैं और यदि हम यह याद रखें कि ईसा का सन्देश पुनरुत्थान है तो हम विश्व को परिवर्तित कर सकते हैं। पुनरुत्थान के पश्चात अपने कार्य या बच्चों के माध्यम से हमारी चित्त दृष्टि जीवन पर नहीं होनी चाहिए। दैवी व्यक्ति सभी सम्बन्धों के बावजूद भी निर्लिप्त होता है। यदि व्यक्ति लिप्त है तो हमें समझने का प्रयत्न करना चाहिए कि उसमें अभी तक दैवत्व की पूर्ण अभिव्यक्ति नहीं हुई है। हम दूसरों के प्रति कितने करुणामय हैं, दूसरों की कितनी सहायता करते हैं और हम कितने सामूहिक हैं, इन बातों से स्वयं को जांचना चाहिए। परस्पर हमें एक दूसरे की सहायता करनी है।

किसी दूसरे को यदि हम कठिनाई में देखें तो विराटका अंग-प्रत्यंग मानकर उसकी सहायता करने का प्रयत्न करें। सामूहिक चित्त ऐसा होना चाहिए कि हम उससे एकाकारिता महसूस करें।

कोई समस्या नहीं है फिर भी हमें अपनी वास्तविकता का ज्ञान होना चाहिए। हम शुद्ध आत्मा हैं और हमने मानव जीवन से दैवत्व को प्राप्त किया है। अतः हमें लोगों के विषय में पूरी सूझबूझ होनी चाहिए। क्योंकि ईसा की अपेक्षा मानव जीवन के विषय में अधिक जानते हैं। जो लोग सहजयोग में आते हैं उन्हें समझने का हमें प्रयास करना चाहिए, उनके आते ही यह नहीं कहना चाहिए कि वे भूत हैं।

हमें उन मानवीय दुर्बलताओं के सम्मुख नहीं झुकना चाहिए जो अभी तक हमारे अन्दर और हमारे समाज में व्याप्त हैं। अपने ही प्रकार की शैली और अपने ही तरह का आचरण हमें अपनाए रखना चाहिए। हम आश्चर्यचकित होंगें कि पूरा विश्व हमारी

पूजा करेगा, हमें फांसी नहीं देगा। परन्तु जीवन काल में ही हमारी पूजा करेगा। यह घटित होगा पर हमें यह समझना है कि एक लक्ष्य के लिए हमारा पुर्नउत्थान हुआ है और वह लक्ष्य है इस विश्व को एक सुन्दर स्थान में परिवर्तित करना और इसके लिए हम सबको अपना पूरा चित्त लगा देना चाहिए। जिन लोगों ने एक विशिष्ट उच्च स्थिति, एक नया मार्ग प्राप्त किया है उनका हमें अनुसरण करना चाहिए और अपने जीवन के माध्यम से अन्य लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए प्रकाश की सृष्टि करनी चाहिए।

मेलबोर्न पिकनिक वार्ता
परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी की आस्ट्रेलिया यात्रा

बात शुरू करते हुए श्री माताजी ने कहा कि प्रकृति और आध्यात्मिकता बहुत अच्छी तरह साथ-साथ चलती हैं और एक दूसरे को उत्साहित करती हैं। विषय परिवर्तन करते हुए तब उन्होंने बताया कि किस प्रकार छद्मावरण में नकारात्मकता आ जाती है और हमारे लिए उसे पहचान पाना भी कठिन होता है। हम इसी नकारात्मकता के साथ तब तक चलते रहते हैं जब तक बहुत बड़े खतरे में स्वयं को न पाएं। इससे सहजयोग को बहुत हानि हो सकती है। इस स्थिति से हमें निकलना होगा और अपने अस्तित्व के मूल्य को समझते हुए अपने दमन, अत्याचार की आज्ञा नहीं देनी होगी और न ही हमें पथ भ्रष्ट होना होगा। उन्होंने बताया कि कुछ नए लोग, जो सहजयोग में आए हैं, उन्होंने बताया वे उन पुराने लोगों से कहीं अच्छे हैं जो सत्ता लोलुप हो गए हैं और स्वयं को सहजयोग का स्वामी मान बैठे हैं। इस तरह का आचरण लोगों के पतन का कारण बनता है। उन्होंने कहा कि हमें बहुत अच्छी तरह से सहजयोग का अभ्यास करना है और उन दम्भी लोगों से सावधान रहना है जो बहुत अधिक बोलते हैं और दूसरे की निन्दा करते हैं। हमें उनकी बात को नहीं सुनना चाहिए और न ही उनकी बातों में लिप्त होना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि अगुवा में कोई कमी है तो वे इसे जान जाएंगी। पर हो सकता है कि वे ये देखना चाहे कि कहां तक हम स्थिति को समझ सकते हैं। हममें उचित, अनुचित में अन्तर करने का विवेक होना चाहिए।

श्री माताजी ने कहा कि सहजयोग 60 देशों में कार्य कर रहा है और उनका ध्यान हर तरफ है क्योंकि हम सब उन्हीं के बच्चे हैं और उन्हें हम सब का खास ख्याल है। हमारे जीवन को बेहतर बनाने के लिए ही सहजयोग आया है, हमें ईश्वर के साम्राज्य के आनन्द के योग्य बनाने के लिए। हर वस्तु हमारे लिए है, मगर यदि हम इस बारे में संवेदनशील नहीं हैं, कि हमारे लिए क्या अच्छा है तो हम जाल में फंस सकते हैं। फिर उन्होंने कहा कि हमें सुबह तथा रात का ध्यान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि शुरू में, वे जानती हैं, कि ध्यान हमें अरुचिकर (boring) लगेगा। मगर धीरे-2 हम उसमें विकसित होंगे और उसके लाभ देखेंगे। उन्होंने कहा कि वे हमारे लिए ध्यान नहीं कर सकतीं और हमें स्वयं विकसित होना है।

उन्होंने हमें यह देखने को कहा कि हम कैसे अद्वितीय समय में जन्में हैं और हम कैसे खास व्यक्ति होंगे जो हम सहज योग में हैं। हम अवश्य ही खास व्यक्ति होंगे और कुछ महान कार्य किया होगा, नहीं तो हम सहजयोग में नहीं होते। हम यहां भौतिक वस्तुयें प्राप्त करने नहीं आये हैं या किसी और कारण से, हम यहां अपने उत्थान के लिए आये हैं, अतः इसका सदुपयोग करने का यही समय है।

फिर उन्होंने पश्चिमी बच्चों के बारे में बोला और कहा कि स्कूल में बच्चे पढ़ना नहीं चाहते। वे पढ़ने की अपेक्षा हर समय खेलना चाहते हैं। बच्चों को अपने जीवन का मूल्य मालूम होना चाहिए। उनमें से ज्यादातर आत्मसाक्षात्कारी आत्मायें हैं और बुद्धिमान हैं। कुछ तो बहुत अधिक विवेकशील हैं। उच्च चीजों में उनकी रूचि बढ़ाने तथा शिक्षा देने का प्रयत्न हमें करना चाहिए क्योंकि उन्हें अभी उन्नत होना है।